मुक्त करों के मङ्गल स्वरूप हैं जो सब देवताओं के देवता हैं और जो समस्त संसार के अधिनायक देवता हैं। सब धर्मों से उत्तम इसी धर्म को हिन्दू धर्म कहते हैं। सब प्राणियों का हित चाहते हुए धर्म की रक्षा और प्रचार करना हमारा धर्म है॥ इति शुभम्॥

पुस्तक के सम्बन्ध में

यह पुस्तक स्वयं इस रिक्त योजना की भूमिका मात्र है। मरुभूमि से तात्पर्य उस भूमि से है जहां एक एक गांवके पीछे तीन तीन बावली से लेकर एक एक बावली जैसी भूमि है। पानी जहां अत्यन्त गहरा और खारीक तर खारी ही है। रतीले टीले जहां पहाड़ों का सादृश्य और भ्रम बताते हों, उसके साथ साथ वह समतल भूमि भी समझनी चाहिए जहां खेती कम और घास अधिक होती है। जहां टीबों की दूरतो और मैदानों में हजारों गाय,ऊंटों के टोले, भेड़ों एवं बकरियों के झुंड के झुंड होने पर भी खाली ही दिखाई दें। जिस भूमि के प्रत्येक गावों की शान्ति को रातरा सपूर धोरे-रात दल भंग करती रहती हैं जहां मृगों के झुंड के झुंड अचानक अपनी नाभिका के तीव्र स्वर से पथिक को चकित और उत्कंपित करते हों। जहां सेवन घास, दूर गठीले बेकरिया-आदि विविध जन्तु के घास और इन सब को नष्ट करने वाले लुहू उनमें बसने वाले पथिक को सदा सदा से भुखमरा और रखता है। यह मरु-भूमि का स्वरूप समझ है जहां के मनुष्य मवेशी इन घास तथा दूसरी वनस्पतियों के सहारे जीवन रखते हों और वैसे ही जहां का मनुष्य वर्ग इन पशुओं पर अपना जीवन निर्भर करता हो, उस भूमि के मनुष्य वर्ग को 'शक्ति' कहा

(निवास) में रातों में उनका बराबर आवागमन बना रहता था, जब कि गायों के चारों ओर कँटीली झाड़ का ऊँचा घेरा रहता था। उन हिंसक जीवों के दिन में भी दर्शन होते रहते थे। मैं और मेरा भाई एक साथ उनके आक्रमण से बचाने के लिए ही गायों के गवाले बन के जाते थे। परन्तु! यह कथा लम्बी है। पढ़ने की नहीं, अनुभव की है। दिन भर गायों के ग्वाले बन के व्यतीत करना, रात को बड़े बूढ़ों की कथाओं का सुनना और सोना यही उस समय का सबसे बड़ा संसार था। बाद में संसार में बहुत कुछ देखा दिखाया, पर सब कुछ भूल गया। परन्तु वे दिन यद्यपि उनका जन्मान्तर में भी न भूलें, ऐसे प्रत्यक्ष अंकित हैं। भाग्य का ऐसा झोंका आया कि सूखे पत्ते की तरह १९६१ में फाजिल्का (पंजाब) में पाँव जमे। साधारण शिक्षा और सद्गुरुओं का संसर्ग तो था ही, उनके संस्कारों से १९१८ में वहाँ एक पुस्तकालय की स्थापना हुई जो अन्त तक एक आदर्श पुस्तकालय कहला सकता है। जिस आश्रम में यह पुस्तकालय है, यहाँ मेरा एक स्थान है जो मुझे [illegible] में प्राप्त हुआ। [illegible] उनके [illegible] [illegible] राष्ट्रीय [illegible] [illegible] १९।० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (... [illegible]) भावलपुर राज्य, जिला [illegible] के गाँवों में ऐसा कर दिया कि मैं उनके [illegible] संस्थाओं से दूर रहकर वन गया। [illegible] के हाथों में तो मैं [illegible] बार पैदल चक्कर काटे

कि-जिस पर आज बड़ी-बड़ी शक्तियों की आँखें और बाजी लग चुकी है, तब बागड़ में तो एक मात्र पानी ही की कमी है। यदि मरुभूमि में पानी हो तो बना बनाया स्वर्ग है।

मैं अब आपको उसी बागड़ में ले चलना चाहता हूँ-जहां अज्ञानान्धकार ने स्वर्ग को नर्क बना रक्खा है। देखिये, बागड़ जाने का रास्ता धीरे-धीरे कैसे बनता जाता है। गतवर्ष ५ सितम्बर को माननीय स्व० चौधरी छोटूराम जी की अध्यक्षता में उत्सव हो रहा था। उस समय और-और लोगों के साथ चार व्यक्तियों ने २ हजार रुपया इसलिए दिया था कि इसके द्वारा मरुभूमि में अक्षर प्रसार का कार्य आरम्भ किया जावे। उस रुपये के साथ विद्यालय कमेटी ने दो हजार और मिलाया और इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए एक कवि को नियुक्त किया जिसका काम यह था कि वह मरु भूमि के गाँवों में घूम-घूम कर बतावे कि किन-किन गाँवों में मांग है, कि जिसके अनुसार उनमें पाठशालायें खोली जाएँ। उन्होंने भ्रमण करके बताया कि अनेक गाँव चाहते हैं कि उनके बालक शिक्षा पायें। परन्तु उनमें यह शक्ति और बुद्धि नहीं है कि अपना संगठित रूप बना कर स्वयं प्रबन्ध कर सकें। लोगों के भाव जानने के लिए मैं स्वयं रावतसर और मुकाम के मेलों पर उन लोगों से मिला। जनता के भावों को देखते हुए बहुत शीघ्र बहुत से गाँवों में पाठशालायें चाहिए। मुझे ज्ञात था कि रतनगढ़ निवासी कलकत्ता प्रवासी श्रीमान् सेठ सूरजमल, नागरमल का श्रीमान् बिड़ला बन्धुओं की तरह ग्राम पाठशालाओं का आयोजन प्रारम्भ है। मैं स्वयं कलकत्ता जाकर उनसे मिला। उन्होंने इस पाठशालाओं का विवरण मांगा और गत २४-६-४५ को उनके कार्य कर्त्ता यहां के कार्य को सन्तोष जनक पा उन पाठ-शालाओं के खर्च की स्वीकृति दे गये जो अब तक खुल

सामाजिक स्तर

यों तो सारे ही भारतवर्ष के निवासियों का सामाजिक स्तर काफी गिर गया है लेकिन मरुभूमि के निवासियों की दशा अत्यन्त दयनीय है। इसका कारण शिक्षा की कमी, रूढ़ियों की गुलामी, आर्थिक तंगी और स्वास्थ्य का निरन्तर क्षय है। आज के युग में रूढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना और अच्छे नियमों का प्रचलन समाज सुधार के कार्य कहे जाते हैं।

संस्कार

प्राचीन भारत के नेताओं (ऋषियों) ने मनुष्य की ऊँची जिन्दगी बनाने के लिये संस्कारों की प्रणाली डाली थी। पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित लोग भले ही संस्कारों के महत्व को समझें लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि संस्कारों ने व्यक्तिगत जीवन को बहुत ऊँचा उठाया था। हिन्दुओं में न्यूनाधिक रूप में यह संस्कार आज भी प्रचलित हैं किन्तु सिर्फ रूढ़ि के रूप और ने रूढ़िया इतनी दूषित और विकृत रूप में हमारे हैं जिनसे पिंड छुड़ाना मुश्किल हो रहा है।

आज प्रत्येक संस्कार बिरादरी भोज का साधन बन गया है। के लड़का पैदा हो लोग दसूठन की बात करते हैं। नाम लिये नहीं अपितु खाने के लिये कोई मर जाओ संस्कार चाहे गोला लकड़ियों से कर दो, चाहे लाश जला छोड़ दो लेकिन मृत्यु भोज जरूर करो। ब्याह हो, गमी हो कोई पर्व हो लोगों हमें जिमाओ यह आवाज होती है। अगर कोई मृतक भोज न करे से निकाला जाता है। मारने पीटने की धमकी

मवेशियों से इन्हें काम लेना पड़ता है। क्यों कि पैसे के अभाव में न वह अच्छे मकान बना सकते हैं और न अच्छे पशु रख सकते हैं। अच्छा खाना कपड़ा न मिलने से इनकी काम करने की शक्ति का ह्रास हो जाता है स्वास्थ्य गिर जाता है और अच्छे पशु पास में न होने से यह अच्छी खेती बाड़ी भी नहीं कर सकते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि दरिद्रता और गन्दगी इनके यहां डेरा डाल देती हैं और चिन्ता नित्य इन्हें जलाया करती है। गरीब का दुनियां में कोई मान नहीं करता। हर समय इन्हें दूसरों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ता है।

यदि मरु भूमि के लोग नाश कारी भोज और नुकतों को छोड़ दें और अपने पैसों को किसी व्यापार व्यवसाय में लगावें तथा खेती की उन्नति पर खर्च करें तथा रहने के मकानों को सुन्दर ढंग से बनवायें तो इनका जीवन सुखी और आनन्दमयी बन सकता है और इसी खर्चे को कुएं तालाब बनवाने में लगावें तो गावों की समृद्धि हो सकती है जिससे कई पीढ़ियों के लिये इन्हें और इनकी सन्तान को सुख प्राप्त हो सकता है। कणादि मुनि ने वैशेषिक शास्त्र में कहा है—"यतो ऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः सधर्मः। अर्थात श्रेयस्कर धर्म (कर्तव्य) वही है जिससे अभ्युदय (सुख और समृद्ध) प्राप्त हो।

हम नकद धर्म के पक्ष पाती हैं। कुआं बनवाने, तालाब खुदवाने और शिक्षा दिलाने के लिये जो धन खर्च किया जाता है वह नकद धर्म है क्योंकि कुए के खुदवाने से हमें पानी मिलता है। तालाबों के बनने से हमारे पशु सुख पाते हैं और शिक्षा से हमारा जीवन ऊंचा होता है। उधार धर्म वह जिसके बारे में कुछ भी पता नहीं बल्कि उसे करने से हमें कंगाली और यातनाओं का सामना करना पड़ता है। हम बाप को स्वर्ग पहुंचाने के लिये नुकता करते हैं लेकिन बाप स्वर्ग पहुंचता है

एक लाख साठ हजार रुपया भी मंगरिया के चेजारों (कारीगरों) मजदूरों और किसानों के पास रहता जिससे उनकी आर्थिक स्थिति ऊँची होती। यह हमने सिर्फ उदाहरण के तौर पर कहा वरना अकेले मंगरिया ने पिछले चार साल में नुक्ता भोजों (मृतक भोज। पर चार लाख-प्रति वर्ष दस हजार की औसत से खर्च किया होगा।

'बूंद-बूंद से घट भरे, टपक रीतो होय' के आर्थिक सिद्धान्त के महत्व को अगर मरु भूमि के निवासी समझलें तो वे अवश्य ही इन नाशकारी प्रथाओं को छोड़ कर अपने कल्याण के लिये कटि बद्ध हो जावेंगे। कुप्रथाओं ने हमारे समाज में और भी अनेकों बुराइयां पैदा की हैं। अनमेल विवाह इसका दुष्परिणाम है। कर्ज से दबे हुए लोग ज्यादा से ज्यादा रकम हासिल करने के लिये अपनी कन्याओं को बुड्ढे लोगों के गले मढ़ देते हैं। इस कन्या विक्रय और अनमेल विवाह ने विधवाओं की संख्या को बढ़ाया है। समाज के चरित्र और स्वास्थ्य को गिराया है। पाप की वृद्धि की है और धर्म का ह्रास हुआ है। वास्तव में अन मेल विवाह हमारी हृदय हीनता का निकृष्टतम उदाहरण है। इस कुप्रथा के कारण सभ्य समाज के सामने हम अपना सिर ऊँचा नहीं कर सकते हैं और बाल विधवाओं तथा अपंग कन्याओं के अभिशाप से हमारा समाज दग्ध हो रहा है।

अगर बागियों को यदि उन्नत होना है और इस नारकीय जीवन को स्वर्गिक जीवन बनाना है तो उन्हें अपने संस्कारों को ठीक ढंग से मनाने की ओर मुड़ना चाहिये। और इन नाशकारी फिजूल खर्चियों को एक दम बन्द कर देना चाहिये। और इसमें जो पैसा बचे उसे अपने मकान अपने घर अपने पशु और अपने गांवों के सुधार में लगाना चाहिये।

दन कहा जाता है। व्यवसायी लोगों के लिए अवश्य यह लक्ष्मी
जा का दिन है, लेकिन सर्व साधारण के लिए सफाई का दिन
है। वर्षा के दिनों में मक्खी, मच्छर, मकड़ी आदि से घरों में
न्दगी हो जाती है उसे दूर करने के लिए इस दिन घर का एक
क कोना साफ करके पोता जाता था। इस त्योहार पर सफाई
आज भी होती है लेकिन पूर्णतया नहीं।

नवरात्री को दौड़कर उत्साह और आमोद पूर्ण जीवन
रारम्भ करने के लिए वसंतोत्सव मनाया जाता था। समस्त
न्दगी को त्याग करने के लिए तथा समाज में संगठन और प्रेम
रने के लिए होली है परन्तु आज हम भूल गए हैं। इन त्यो-
हारों के वास्तविक महत्व को यदि अब भी हम उनके उद्देश्य
ा करने लगें तो हमारा कल्याण निश्चित है।

स्वास्थ्य

संसार का सर्व प्रथम सुख 'निरोगी काया' है। मरुभूमि का
ा वायु शुष्क होने से रोग नाशक है लेकिन यहां के लोगों की
ानता और आलस्य के कारण उत्तम जलवायु के होते हुए भी
लोगों रोना पड़ता है।

मरुभूमि के दो मुख्य रोग है मरुजन्वा और मलेरिया और
ो ही दोनों की गन्दगी के कारण होते हैं।

अच्छी खुराक बच्चों को न मिलने से हमारी नसल रात दिन कमजोर, चिड़ चिड़ी और रोगी होती जा रही है। यह शर्म की बात है।

यूरोप के लोग स्वस्थ रहने के महत्व को खूब समझते हैं। इसके लिए वे निम्न बातों पर ध्यान देते हैं:—

(१) समय पर जगना और समय पर सोना।

(२) ताजा शुद्ध और शक्ति वर्द्धक भोजन।

(३) ताजे जल और ताजे मकान का सेवन।

(४) तरुण अवस्था में शादी।

(५) जितना खाना उतना परिश्रम करना।

(६) आमोद-प्रमोद के समय आमोद प्रमोद काम के समय काम।

(७) शरीर वस्त्र और निवास स्थान को साफ रखना।

वेद में कहा गया है कि लम्बी आयु प्राप्त करो और इस लम्बी आयु में सौ वर्ष तक इस प्रकार जियो कि तुम्हारे सुनने की शक्ति देखने की शक्ति और चलने फिरने की शक्ति क्षीण न होने पावे। लेकिन क्या इस तरह से लम्बी आयु भारत के बूढ़े पुरुष और स्त्री के लक्ष में आ सकते हैं, वर्तमान [illegible]

न हो पायेगा कि जहाँ तक हो हम बीमार न पड़ें। और पड़ें तो हम तभी तक [illegible] जब हम उचित आहार ग्रहण करेंगे। और उचित विहार के रास्ते पर चलेंगे।

यह बात नहीं कि रोग होगा नहीं। अवश्य होगा। क्योंकि [illegible] में कोई भाग अमरत्व नहीं है "कबीर साहब ने ठीक कहा है कि" जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।" [illegible] को दूर करने के लिये नहीं तथा [illegible] [illegible] परिश्रम होना चाहिये।

इसका यह निश्चित सिद्धान्त है कि औषध सेवन से बचना, दुर्बलता से डरना, सफाई और स्वच्छता की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और सन्तुलित रहने [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] से ही [illegible] बन सकेंगे।

[illegible]

[illegible] के लिये जहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। जिससे [illegible], [illegible] और [illegible] की [illegible] हुई है। [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] है—

"निकलो मैं तो इसी [illegible] न हमारे जिन्दगानी में;
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] पानी में;
[illegible] [illegible] [illegible] जिन्दगी [illegible] के [illegible]
वह [illegible] [illegible] में तो [illegible] है [illegible] में
यह [illegible] का प्याला [illegible] का [illegible] प्याला है
[illegible] है [illegible] [illegible] में [illegible] है [illegible] पानी में।"

सिगरेट और बीड़ी के रूप में सेवन की जाती है। जिसे वे आजकल की सभ्यता समझते हैं। वृद्ध लोग तो बचपन में इसके अभ्यासी नहीं होने से उन्हें यह अच्छी लगती है, परन्तु अपने युवा लोगों की देखा देखी इस व्यसन को लगा लेते हैं। वकील और डॉक्टरों में से इसके अनेकों उदाहरण हैं। मध्यम श्रेणी के लोगों में से एक बड़ा भाग इसे शौक और सभ्यता की चीज समझकर अपनाये हुए है। उनका कहना है कि अतिथियों की प्रथम आवभगत इसी से होती है। अब रहे गरीब वे इसे विलास का साधन मानते हैं। उनका कहना है कि इसी के बहाने बीच-बीच में मुनाफा लेते हैं लेकिन कोई किसी भी दृष्टि से क्यों न पीये और पीने का औचित्य कुछ ही क्यों न जाहिर करें आखिर यह (तम्बाकू) शारीरिक मानसिक और आर्थिक सभी पहलुओं से हानिकारक है। वास्तव में यह एक विष है जो स्वास्थ्य, बुद्धि, धन और धर्म सभी का नाश करता है।

हम तम्बाकू खा, पी और सूंघकर तो पाप करते ही हैं लेकिन इसका बोना भी पाप है।

क्योंकि जितनी भूमि में हम इस विष को बोते हैं उतनी में अगर फल, शाक, सब्जी और अन्न बोवे तो हजारों मनुष्यों और पशुओं का उदर हो।

इसका खर्च भी तो साधारण नहीं है क्यों कि इसकी खपत इतनी होती है कि प्रतिवर्ष लाखों बीघे इसकी खेती होती है तब भी पूरी नहीं पड़ती और विदेशों से मंगानी पड़ती है आज कल तो १५-२० का साधारण मजदूर और मुलाजिम भी ... के बीड़ी सिगरेट व स्नफ पी जाता है अगर वह इन व्यसनों के पीछे खर्च न करे तो उसका कितना अच्छा ... बन जाये सम्भव है पचास सिगरेट, बीड़ी का खर्च ... से बचने अनेकों लाभ ... [illegible] सहज

। लेकिन पेय पदार्थों में इसे यूरोपियन लोगों की संगति से
त में स्थान मिला है । पहले अंग्रेज व्यापारियों और
कों के साथ काम करने वाले बाबू लोग इसका सेवन करते
। लेकिन आजकल यह शहरी मजदूरों का तो नित नैमित्तिक
; बन गया है और अब यह देहातों में भी काफी तेजी से
ार पाती जा रही है। गांजा,भांग,और चरस अवधूतों (:) की
ा से यह पहले से ही प्रचलित है। इन तरह बहुत ही कम आम-
ी रखने वाला भारत वासी इन दुर्व्यसनों में अपनी आमदनी
एक बड़ा भाग फूंककर शरीर को बलिष्ट बनानेवाले, दूध
ार मक्खन आदि पदार्थों से कतई वंचित रहता जारहा है,
ार यही कारण है कि जरा भी लिखा पढ़ी करने से बाबुओं
सिरदर्द होने लगता है और मजदूरों की टांगे लड़खड़ाने
गती हैं। भरी जवानी में पिचके हुए गाल, तेजहीन आंखें
पने देशवासियों को देखकर किसे दुःख न होगा ? लेकिन
च्छा स्वास्थ्य अच्छी खुराक चाहता है और अच्छी खुराक
ल सकती है बचत करने से। इसीलिये प्रत्येक समझदार
क्ति का कर्तव्य है कि भांग, तम्बाकू, गांजा चरस, शराब
ार चाय सबका बहिष्कार करके और इन चीजों को अपने
स में फटकने तक न दें, अगर ऐसा हुआ जो होना ही चाहिए
। हमारा राष्ट्र स्वस्थ और बलिष्ट राष्ट्र बन जायगा। वास्तव में
ह कार्य न केवल अपने लिये किन्तु सन्तानों और मुल्क भर
लिए कल्याण का मार्ग होगा और ऐ न अभागा होगा
। अपनी सन्तानों और मुल्क याण न करना
हता हो।

ध्यान देना चाहिये, जहां कुओं का पानी पीने के लिये दुर्लभ है, वहां जोहड़ों के पानी को कूड़े कर्कट और मन्दिरों तथा पशुओं की गन्दगी से बचाना चाहिये और यथा संभव उबाल कर पीना चाहिये। मवेशियों के पीने के जोहड़ अलग होते और आदमियों के पीने के लिये अलग होने चाहिये।

मरुभूमि मे जितना जेवर प्रचलित है उसे यदि कतई खत्म कर दिया जाय तो बहुत ही अच्छा हो वरना उसमें सुधार काफी होना चाहिये। गले मे चांदी या सोने की हल्की जंजीर हाथों में दो दो चार चार चूड़िया, कानों मे बाली और पैरों में हलका मामूली जेवर बस इतने तक जेवरों की सीमा बंध जानी चाहिये। अनाप शनाप जेवरों में जो गढाई बनवाई खर्च होती है वह व्यर्थ जानी है। हम चाहते हैं कि जीवन में सादगी और सात्विकता आनी चाहिये न कि नकलीपन और आडम्बर।

जिस तरह शराब, गांजा और चरस से बर्बादी होती है उसी भांति जेवरों के शौक ने भी देहातियों की गरीबी को बढाया है। जो चीज आज हम १००) की बनवाते हैं कल ही अगर उसे बाजार मे बेचने ले जाये तो मुश्किल से ९०) हाथ पड़ेंगे और अगर पांच वर्ष बाद ले जायें तो १००) में ७०) हाथ पड़ेंगे। अत जितना भी हो सके जेवरों का रिवाज कम होना चाहिये। वास्तव में स्त्रियों का सच्चा जेवर उनका अच्छा चलन और उत्तम सतान है। अत संतानों को योग्य बनाया जाये और व्यर्थ रिवाजों को छोड़कर सभ्य लोगों का जैसा जीवन बनाया जाये।

घरों में अश्लील एवं अपशब्दों का प्रयोग

हमारे देश और विशेष कर गांवों में गालियों-अपशब्दों के उच्चारण का बहुत ही अधिक प्रचलन है। बात बात में मा

बहिन आदि की गालियां निकाल २ कर अपने अज्ञान एवं अंतर्मन का परिचय लोग देते रहते हैं, पशु को भी हम इन्हीं गालियों के द्वारा चलाते और हांकते रहते हैं। जिनके ऊपर उनका कुछ भी प्रभाव नहीं है। यह तो एक मात्र शब्द के शुद्ध किए उच्चारण एवं लाठी प्रहार ही को जानता एवं सुनता है। हम अपने शिशुओं को लाड़-प्यार के समय लुच्चा-बदमाश आदि अपशब्दों का ही उच्चारण करते हैं। बालक में नकल करने की बहुत ही भूख होती है। अतः जो २ शब्द व क्रिया वह सुनता या देखता है, उसे ही करने व उच्चारण करने का अभ्यासी हो जाता है। लड़ते हम आपस में हैं और उन मा-बहिनों बेटियों का नाम ले ले गालियां निकालते हैं जो बेचारी अपने घरों में बैठी हैं। कितनी नीचता व कायरता का यह द्योतक काम है। हम विरोधी पर क्रोध में आक्रमण नहीं करते किन्तु इन्हीं बुरी गालियों से हम उसे चिढ़ाने व नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। हम अपने सगे-सम्बन्धियों को गन्दी गालियों से प्रसन्न करते हैं और उसमें परस्पर मांगलिक गीतों का नाम आता है। गाली निकालना असभ्यता एवं जंगलीपन की निशानी है। सभ्य देशों में इसका नाम तक नहीं है। हमारे ये अपशब्द हमारे भीतरी भावों को प्रकट कर रहे हैं कि हमारे सुन्दर शरीर में हमने कितने बुरे विचार छुपा रखे हैं। जो भीतर होता है वही बाहर आता है। यही सब बुरी गालियां अपशब्द बुरे इशारे [illegible] सहन [illegible] के हम अपना [illegible] है [illegible] वह अपना [illegible] स्वभाव [illegible]

सेवा कर गांव वालों को सुखी और हृष्ट-पुष्ट हो जाना चाहिये।

तीसरे देवता हैं गांव वालों के बजरंग बली हनुमान। इस उपासना का सीधा तात्पर्य है कि अपने को हनुमान जी की तरह ब्रह्मचारी बनाकर अपने शरीर को वज्र जैसा बनायें। इनकी उपासना में मुख्य तत्व यह है कि कोई भी हनुमान का उपासक मांस और शराब खाने और पीने की तो बात क्या उनकी छाया तक पड़ने नहीं देता। और उनको खाने वाला कुष्टि हो जाता है, यही तत्व इस उपासना में छिपा हुआ है। अपने घरों में दो दो देई—(हनुमान जी के नाम छोड़ी हुई गाय) गायों के दूध दही से सारा परिवार हृष्ट-पुष्ट और वज्र जैसा शरीर बना सकते हैं। धागड़ के लोगों को पहले की तरह प्रत्येक घर में देई गाय छोड़नी चाहिए। और उनका दूध दही दोनों समय परिवार में लगना चाहिए। सच्चा गोपालक वही है जो दूध दही से हृष्ट-पुष्ट हो गौओं का पालन करता है। धागड़ (मरुभूमि) में जिसके यहां १० गौएं हैं यदि वह अपने परिवार के लिये दो देई —गायें दूध देने वाली और छोड़ दें तो कोई कठिन बात नहीं है।

अच्छे ढंग से खेतों का काम नहीं कर पाते। ऐसे ही अनेक कारणों से मरु भूमि निवासी कष्ट से जीवन व्यतीत करते हैं। अब देखना यह है कि हम निम्नस्तर से उच्चस्तर को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

गरीबी दूर करने के उपाय—शिक्षा:—

इन तीन वर्षों में हमें अपनी शक्ति पूरी लगानी है। सबसे पहला काम हमारा यह है कि कौन कौन सी आबादी है जो स्कूल खुलने के योग्य है। जिसमें पास की आबादी के बच्चे भी आकर स्कूल के अन्दर शिक्षा प्राप्त कर सकें, जहां पानी और स्थानादि की सुविधा हो। इसके सम्बन्ध में विस्तार से आगे लिखा जायेगा।

शिल्प:—

इन प्रान्त में भेड़, बकरियाँ और ऊँट बहुतायत से पाले जाते हैं। जिनकी ऊन और जट से अच्छे-अच्छे वस्त्र, दरी, शोरे, बोरियां इत्यादि का शिल्प अच्छी तरह चल सकता है। चार महीने की फसल का कार्य छोड़ कर इन लोगों के पास कोई काम नहीं होता। उस समय सब परिवार इस शिल्प में लग कर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार अपने पांवों पर खड़े हो सकते हैं। इसके साथ साथ स्थान २ पर मृत पशुओं का चमड़ा बनाने का काम उनके सींग झांप आदि से छड़ी, 'छतरियां चाकू, छुरी आदि के दस्ते बनाने और बटन आदि के काम चल सकते हैं। इसी प्रकार सरेस आदि का काम पर आसानी से हो सकता है। तथा यत्न करने पर गिलसरीन आदि अन्य वस्तुएं भी इस इलाके और इन्हीं स्थानों में बन सकती हैं। इससे अन्य लोग नहीं तो कम से कम हरिजन तो काफी उन्नत हो सकते हैं।

नहीं आयेंगे। इन कुएँ और तालाबों के पानी की बदौलत इन
गांव के जंगल का घास भी चरा जायेगा। इसलिये
ागड़ के अधिक गांवों में कुएं तालाबों के न रहने का मुख्
ारण है। बहुत से खालसे के गांवों में भी इसी प्रकार भूंग
ौर पी से जो पैसा वसूल होता है, जैसे-बड़ोपल आदि। वह
भी राज्य में जमा होता रहता है। जो कि गांव वालों और
राज्य कर्मचारियों के दोष से इन तालाबों और दाबों पर न लगने
से वे तालाब और दाबें भी मिट्टी से भरती रहती हैं। अतः
इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। कि वह गुत्थी
कैसे सुलझ सकती है। यदि इसके सुलझने में गांववालों को
स्थिर लाभ है तो अवश्य ही सुधारना चाहिये। रही बाहर
वालों के पशुओं की समस्या। उनकी आपसे उनके लिये अलग
कुंए, तालाब और जंगल सुरक्षित रहें। जिससे परस्पर पट्टेदारों
और गांव वालों में संघर्ष पैदा न हो। बाहर वाले भी अपने
निश्चित स्थान पर स्वयं लाभ उठा कर पट्टेदार और राज्य को भी
लाभ पहुँचाते रहें। ये छोटी छोटी समस्याएं ऐसी हैं जो
आसानी से सुलझाई जा सकती हैं। पट्टेदार और उनके
सने वाले राज्य और उनकी प्रजा दोनों में स्थिर नेह के
न्धन सदैव के लिए बने रहें। और उन स्थानों के पशु
न दूने और रात चौगुने फलें फूलेंगे। जिससे दोनों ही
फ अपार लाभ होता रहेगा। स्वर्ण भूमि इस बागड़ की पानी
मस्या पर समुचित विचार करना हम सब का कर्त्तव्य है।

अपवाद

भूमिपति-जर्मीदार भी ध्यान दे रहे हैं। गावत नर
ानेर) ठिकाने के अन्तर्गत अपने गांवों में प्रति वर्ष दो एक
व कुएं बनवा देते हैं जोधनार (जोधपुर) के ठाकुर

पदार्थ छाछ, दही, और मक्खन हमारे जीवन के लिये अमृत है। उनके अलग अलग गुण इस प्रकार हैं।

दुग्ध—मधुर, रसयुक्त, वात पित नाशक, आयुबल, मेधा, वीर्य्य और रस को बढ़ाने वाला तथा अवस्था को ठीक रखने वाला रसायन है।

दही—उष्ण वीर्य, अग्नि दीपक, चिकना भारी, विपाक से खट्टा, मल को बांधने वाला, मूत्र कृच्छ, जुकाम, विषम ज्वर, अति सार और कृशता में लाभ कारी और बल वीर्य को बढ़ाने वाला है।

घृत—स्वादिष्ट और रसायन, नेत्रों के लिए लाभकारी, अग्नि वर्द्धक, शीत वीर्य, कांति, ओज, तेज, सौन्दर्य, वृद्धि और आयु को बढ़ाने वाला है।

छाछ—ठंडा, हलका, पित्त, थकावट प्यास आदि को दूर करके अग्नि को बढ़ाता है। भोजन के अंत में छाछ पीना अत्यन्त लाभ कारी है। इसके सिवा इसका मूत्र भी निहायत हितकारी है। उससे अनेकों रोग दूर होते हैं। जैसे—कर्णशूल आदि।

गोपालन की समस्या

गोपालन और गोचर भूमि का अकाट्य सम्बन्ध है। भारत वर्ष में गो पालन की जो विकट समस्या उपस्थित हो रही है उसके लिये यही मरुभूमि उप युक्त है। यहां के एक एक गांव के जंगल में हजारों गायें पल सकती हैं। मरुदेश के भ्रमण समय ही मरुभूमि के जंगलों में जब अनेकों गटों को समय-समय पर देखा कि एकएक घर के पास कई कई सौ गायें हैं। जिनकी बदौलत उनके घरों में घी दूध की नदी बहती है। उन्हीं के प्रताप से जिनके थैलों में खूब नोट भरे हैं। आप किसी भी

पड़ताल करने पर मालूम हुआ कि जिन दिनों में घास होती है उन्हीं दिनों में इनका पेट बाड़ी होती है और साथ ही इन्हीं महीनों गांवों का प्रत्येक बालक से बूढ़े तक मलेरिया मौसम की बुखार और नहरुआ रोग से अवश्य पीड़ित होते हैं। इन दोनों रोगों के कारण ये लोग समय समय पर अपनी खेती को अधिक रूप से नहीं सम्भाल सके फिर घास काटने और संग्रह की तो बात ही कहां। अब देखना है कि दोनों बीमारियां लोगों को क्यों होती हैं। बहुत जांच पड़ताल के बाद अनुभव हुआ कि ये लोग घी दूध को किसी भी दिन सिवाय वर्ष के दो चार त्योहारों के अलावा ब्याह शादी या मरने के के प्रयोग में नहीं लाते। इनके शरीर ऐसे बन गये हैं कि साधारण से रोग के धक्के को भी नहीं सह सकते। इनके नहरुआ असाढ़ से चल कर पौष माघ तक इनका साथ देता है और बुखार भादों से चल कर समस्त शीतकाल साथ देता है। ऐसी अवस्था में ये धन तो कैसे प्राप्त कर सकते हैं। और यदि घी बेच कर कुछ इकट्ठा किया तो वह ब्याह शादी में लग गया और किसी परिवार में किसी की मृत्यु हो गई तो किसी ऊँट आदि पशु को बेच कर या कर्ज निकलवा कर पीछे औसर (मृतक भोज) करते हैं। इन कारणों से इन लोगों की अवस्था सैकड़ों वर्षों से वैसी की वैसी पड़ी हुई है। जो कुआं या तालाब अच्छी या बुरी अवस्था में हो गया तो गांव की हिम्मत नहीं कि वे उसे फिर से ठीक करा दें। किसी नये कुएड या तालाब का स्वप्न देखना तो दूर की बात है। यह तो कोई दयालु सेठ चाहे किसी गांव में बनवा दे और उसे बनवाये के टूट-फूट की मरम्मत भी लोग शायद ही करवा सकें।

इतने अन्ध विश्वास रूढ़ि और कुरीतियों ने इनको घेर लिया है कि जिससे न ये अपने रहन सहन पर बनव सकते

उनकी गाय ब्याती है उन दिन उसी गौ के दूध में एक सेर शक्कर मिलाकर पिलाते हैं। फिर उसे कोई खुराक नहीं देते फिर भी उनकी गायें खूब मोटी ताजी बढ़िया नस्ल और अधिक दूध देने वाली होती हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि वे अपना सारा समय गौओं की सम्भाल तथा देख भाल में लगाते हैं। जिसके कारण उनकी गौएँ इतनी अच्छी हालत में हैं। और उन गौओं से मिलने वाले घी, दूध से उनके लम्बे चौड़े डील डौल वाले तथा शक्तिशाली शरीर हैं। जिनके कारण उनके नजदीक स्वप्न में भी कोई रोग छू तक नहीं सकता। न कोई नहारुआ आदि नाड़ी व्रण देखने में आता है। क्योंकि वे उसकी दूध और छाछ की बदौलत ही बलवान और शक्तिशाली हैं। जिसके कारण उनके मुकाबिले में कोई रोग ठहर नहीं सकता. दूसरी तरफ मरुभूमि के निवासी आज गाँव के लोग हैं जो अपने प्रारम्भ के महीने डेढ़ महीने के दस बीस रुपये के दूध के लालच में अपने बछड़े बछड़ियों को जीने और मरने की किसी भी अवस्था में रहने नहीं देते।

"अल्पस्य हेतौ बहु हातु मिच्छन्" इस कहावत के अनुसार अपनी गायों का दूध और कद तथा शारीरिक शक्ति को दिन पर दिन कम करते जा रहे हैं। जिसका परिणाम यह है कि इनको इसी प्रकार से दूध और दूध से बने पदार्थ दिन पर दिन दुर्लभ हो रहे हैं। यही एक बागड़ की समस्या है जिसको सुलझाने की बहुत आवश्यकता है। मुझे इन आदमियों और पशुओं की दशा को देख करके मालूम हुआ कि मैं अपने दूसरे कामों को छोड़ कर इनके सुलझाने में कुछ समय लगाऊँ वह समय भी मैंने बहुत थोड़ा सोचा है—इसीलिए [illegible] प्रकार के इस बोझ के [illegible]

— —

कारण शिक्षित सज्जन इधर आना ही पसंद नहीं करते। यदि कोई भूला भटका इधर आ भी जाता है तो आर्थिक समस्या हल न होने, जल वायु तथा व्यवहारिक खाद्य सामग्री के अनुकूल न होने के कारण अधिक समय तक टिक नहीं सकता। इसके अतिरिक्त आवागमन के सुलभ और सुविधा जनक साधन भी एक गाँव को दूसरे गाँव से जोड़ने के बहुत कम हैं। गर्मी में धूल उड़ने के कारण मार्ग का पता नहीं लगता है। गाँव बहुत दूरी पर बसे हुए मिलते हैं। प्यास और लूओं के भय से कोई पर देशी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का साहस नहीं करता। यहाँ आबादी दूसरे प्रदेशों की अपेक्षा बहुत कम है, और चूंकि यहाँ की ग्रामीण जनता प्रायः अपने स्थान को छोड़ कर अन्यत्र जाना अधिकतर पसन्द नहीं करती। इसलिये यहाँ के लोग कूप-मण्डूक बने रहते हैं। कहाँ क्या हो रहा है? इसका इनको कुछ ज्ञान नहीं होता है। इसलिये लोग अपने ही रीति रिवाजों को सर्वोच्च स्थान देते हैं। शिक्षित वर्ग से सम्बन्ध न होने के कारण ही ऐतिहासिक तथा राजनैतिक उथल पुथल में साधारण जन समूह का सम्बन्ध नहीं रहा है और इसी कारण यहाँ की जनता अन्य सभ्य देशों के आचार व्यवहार शिक्षा दीक्षा एवं सुधार से अनभिज्ञ चली आ रही है। यह सब अशिक्षा का ही प्रताप है। यहाँ की वेष भूषा बहुत ही सादी है। ग्रामीण जनता लज्जा निवारणार्थ और धूप शीत से बचने के लिये कपड़े पहनती है। वस्त्र भी बहुत मोटे और सादे पहने जाते हैं। शरीर की तथा कपड़ों की सफाई का ध्यान ये कतई नहीं रखते फल स्वरूप कई बिमारियों का भी इन्हें शिकार बनना पड़ता है। इन सब कारणों की जननी अशिक्षा ही है। अतः यदि ग्रामीण जनता को सुखी और सम्पन्न बनाना है, तो सर्व प्रथम इन को शिक्षा देने की आवश्यकता है। शिक्षित होने पर ये स्वयं अपने

रचनात्मक आयोजना

हमारी योजना

मरुभूमि में सेवा कार्य का हमने संकल्प किया है। हम उसे सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी सभी दृष्टियों से उन्नति देखना चाहते हैं। किन्तु सभी उन्नतियों का मूल शिक्षा है। अतः हमने मरुभूमि शिक्षा प्रचार के लिए एक तीन वर्षीय योजना बनाई है। इस योजना के पूरा होने पर हमें विश्वास है कि मरुभूमि के निवासियों में ज्ञान होने की स्वतः चाह बढ़ जायगी, और हमें भी कुछ अधिक उत्साह प्राप्त होगा, इन तीन वर्षों में हम इस प्रदेश में नौ पाठशालाएँ खोलेंगे। जिनमें पुस्तकें व समाचार-पत्र भली प्रकार पढ़ने और समझने लायक हिन्दी ज्ञान का ज्ञान यहां के निवासियों को हो जाय, साथ ही हिन्दी (या यहां की आवश्यकता को दृष्टि में रखकर गणित (हिसाब-किताब) इतिहास, भूगोल, शरीर-विज्ञान, धर्म विज्ञान, कृषि, पालन सम्बन्धी आवश्यक विषयों की जानकारी भी कराई जायगी।

इन पाठशालाओं की शिक्षा का उद्देश्य मरुभूमि वासियों के जीवन की सर्वांगीण उन्नति करना है। आधुनिक शिक्षा के दोषों को हम यहां लागू नहीं करना चाहते। हमारी शिक्षा का उद्देश्य जीवन में उत्साह, कर्म दक्षता, तथा नम्रता लाना है। उन्हें क्लर्क या बाबू बनाना नहीं।

इस योजना को सुचारु रूप से संचालन करने के लिए हमें एक केन्द्र स्थापना करनी होगी। इस केन्द्र से ही पाठशालाओं का निरीक्षण एवं [illegible] का कार्य

रचनात्मक आयोजना

हमारी योजना

मरुभूमि में सेवा कार्य का हमने संकल्प किया है। हम उसे सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी सभी दृष्टियों से उन्नति देखना चाहते हैं। किन्तु सभी उन्नतियों का मूल शिक्षा है। अतः हमने मरुभूमि शिक्षा प्रचार के लिए एक तीन वर्षीय योजना बनाई है। इस योजना के पूरा होने पर हमें विश्वास है कि मरुभूमि के निवासियों में उन्नत होने की स्वतः चाह बढ़ जायगी, और हमें भी कुछ अधिक उत्साह प्राप्त होगा, इन तीन वर्षों में हम इस प्रदेश में सौ पाठशालाएँ खोलेंगे। जिनमें पुस्तकें व समाचार-पत्र भली प्रकार पढ़ने और समझने लायक हिन्दी भाषा का ज्ञान वहाँ के निवासियों को हो जाय, साथ ही हिन्दी में ही वहाँ की आवश्यकता को दृष्टि में रखकर गणित (हिसाब-किताब) इतिहास, भूगोल, शरीर-विज्ञान, धर्म विज्ञान, कृषि, गोपालन सम्बन्धी आवश्यक विषयों की जानकारी भी कराई जायगी।

इन पाठशालाओं की शिक्षा का उद्देश्य मरुभूमि वासियों के जीवन की सर्वांगीण उन्नति करना है। आधुनिक शिक्षा के सिद्धान्तों को हम यहाँ लागू नहीं करना चाहते। हमारी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जीवन में उत्साह, कार्य दक्षता, तथा नम्रता लाने का है। उन्हें क्लर्क या बाबू बनाना नहीं।

इस योजना को सुचारु रूप से संचालन करने के लिए हमें एक स्थान पर केन्द्र स्थापना करनी होगी। इस केन्द्र से ही सभी पाठशालाओं का निरीक्षण होगा, इस केन्द्र का एक

केन्द्र व्यवस्थापक होगा, उसको देख रेख में उस केन्द्र में व्यवस्थित कार्यालय के अतिरिक्त एक पुस्तकालय [illegible]। जिसमें मरुभूमि निवासियों के उपयुक्त गोपालन कृषि, स्वास्थ्य रक्षा, उद्योग एवं कला कौशल आदि विषयों पर सुन्दर पुस्तकों का संग्रह रहेगा। पुस्तकालय स्थायी होगा। जि[illegible] सभी लाभ उठा सकेंगे। इसके अतिरिक्त हमारे केन्द्र का विचार इस प्रदेश की खेती बारी, गोपालन, देहात—सुधार आदि अनेक कार्य हैं। किन्तु इनका प्रारम्भ देश के धनी मानी महानुभाव व देहातियों की उदारता और सहयोग पर निर्भर है।

योग्य अध्यापकों की नियुक्ति इसी केन्द्र से होगी। पाठशालाएँ किसी भी चौपाल, मन्दिर, अथवा धर्मशाला में खोली जा सकेंगी जहाँ इनका अभाव होगा वहाँ खुली हवा में स्वच्छ स्थान पर गाय बालों को पाठशाला का प्रबन्ध करना होगा।

इन १०० पाठशालाओं का एक साथ खोलना कठिन है। कारण वर्तमान समय में योग्य अध्यापकों का अभाव है। किन्तु हमारा यह प्रयत्न होगा कि एक वर्ष के अन्दर ही सारी पाठशालाएँ खुल जायें चूंकि हम एक ग्राम में पाठशाला तीन वर्ष तक रखना चाहते हैं इसलिए तीन वर्ष पाठशाला खुलने के बाद से ही गिने जायेंगे।

चारपाई नहीं है। खाने-पीने के लिये तरह-तरह के अन्न और शाक सब्जी एवं फल नहीं हैं। फल-फूल से लदी बेलें और तरह-तरह की सुगन्धित फूलों वाले और-और पौधे वृक्ष नहीं हैं बिच्छू-सर्प और दूसरे-दूसरे भयङ्कर प्राणियों से कदम-कदम पर भय रहता है। उनके इलाज के साधन औषधि उपचार आदि का नाम तक नहीं है। मैले-कुचैले बैठी हुई छाती के मनुष्यों के पुतले ही सब जगह दिखाई देते हैं। कोई प्रसन्न-वदन, सुखी, स्वस्थ मानव निर्भय उसमें नहीं। है यही नर्क का संक्षेप में वर्णन है।

इन तमाम दुःखों को और उस लम्बे चौड़े स्थान को देखने के बाद उसने उन सब लोगों को इकट्ठा किया और इकट्ठा करने पर उन लोगों से कहा कि यदि हम सब मिलकर प्रयत्न करें तो जितने दुःख दर्द और कठिनाइयां हमारे सामने हैं वे सब हमारे सबके परिश्रम से कुछ समय के बाद दूर हो सकती हैं उन लोगों ने जो सामने थे अपनी ओर से विरोध किया कि यह नर्क है ही दुःख भोगने के लिये फिर हम इसे अच्छा क्यों बनावें। हमें यह भोगने के [illegible] सुख कैसे मिल सकता है [illegible]

इस मल की खाद बनने पर भारी ऊपजाऊ और शक्ति शाली बनाई उनकी जमीनों में पैदावार बढ़ी तो प्रत्येक खेत में सिंचाई की माँग होने लगी और वे किराये या मूल्य पर बढ़ गई। इसी प्रकार पेशाब के लिए स्वच्छ परदे वाले पेशाब घर बना दिए गये और नीचे यही पेशाब जमा होकर आबादी से बाहर जाने लगा। और यह भी जिससे गाँव बिलकुल स्वच्छ रहने लग गया। पीने के लिए कहीं कुएँ कहीं तालाब कहीं कुण्ड और नाले आदि बनवा दिए गये।

जिनके पास स्नानागार बना दिए गए वैसे ही पास में सन्ध्या हवन आदि के भवन बना दिए गये। पास फल फूलों के वृक्ष लगा दिए गए। जिससे नहाने धोने का पानी काम में आने लगे। दूर-दूर स्थानों से अच्छे घंरा वाली गउएँ मँगाती गई। कुछ लोग गौओं का काम, कुछ धन का काम लिया। गौओं के रहने के लिए सुन्दर-सुन्दर छप्पर व स्थान बना दिए। गउएँ जिससे वर्षा या सर्दी से बच सकें। उनके पीने के लिए स्वच्छ पानी का प्रबन्ध कर दिया गया। इस प्रकार वे लोग अन्न फल और दूध से सम्पन्न होकर अपने शरीर को सुदृढ़ और बलवान बनाने में समर्थ हो गये। अपने गाँव से बचे हुए अन्न फल दूध और घी को सुन्दर मार्गों के द्वारा उन-उन स्थानों में पहुँचाने लगे जहाँ उनकी कमी थी। पहनने के लिए सुन्दर-सुन्दर वस्त्र बनने लगे। रुई और रेशम वहाँ उपजाने लग गये। उनके लिए सुन्दर-सुन्दर मकान बनने लगे। इस तरह से घर घर भी उनका दूर हुआ। मरे पशुओं के चमड़े के लिए चमड़े रंगाई के कारखाने खोल दिए गये। हड्डियों तथा सींगों आदि से [illegible] सरेशदार चर्बी आदि के [illegible] विशेष विशेष प्रकार के पक्षी-पशु आदि [illegible] लगे। जो कि मरने के बाद उसकी सैकड़ों-

[illegible] हमारे गावों का कूड़ा गड्ढों में इकट्ठा कर खाद बनावें और [illegible] जो बाहर ही जाते हैं वह ऊपर बताये ढंग से जावें [illegible] मल भी दूषित करने वाले न मिलें। रेतीले इलाकों में [illegible] गड्ढा खोदने पर उस पर बैठने पर बाद में [illegible] डाले जा सकते हैं परन्तु भूमि वालों को लाठी में फला [illegible] गड्ढा खोदने से यही काम हो सकता है कि ऊंच नीचे [illegible] मल खाद के रूप में भूमि को बहुत ही उपयुक्त एवं उपजाऊ [illegible] बनाते हैं अतः ये काम सभी लोगों को करने चाहिए। ये नहीं [illegible] हैं जो दूर मनुष्य को अमर बनाने वाला है यही यज्ञ आदि [illegible] का भी सार है मनुष्य को अमरत्व की ओर ले चलने वाले [illegible] मेधा है। पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूर्ण [illegible] है, "उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैति लक्ष्मी"। दैवेन देयमिति [illegible] कापुरुष वदन्ति,," उद्योगी सिंह वीर पुरुष लक्ष्मी को पाता है [illegible] देवा ऐसा विचार कादर करते हैं। 'साहसे खलु [illegible] मन्त्र ही में लक्ष्मी का निवास है। 'कि दुष्करं व्यव [illegible] प्रबल वीर्य को संसार में कुछ दूर नहीं है। [illegible] पुरुषकारार्थ,, है अर्थात् संसार में इससे भारी शक्ति [illegible] है। इत्यादि हमारे ऋषि मुनि एवं शास्त्रों का कथन है [illegible] पुरुषार्थ द्वारा हम भी अपने देश और उसके गावों को [illegible] अवस्था में ले जा सकते हैं आइये प्रारम्भ की कथा को [illegible] कि किस प्रकार उसे दण्ड स्वरूप नर्क में भेजा गया और [illegible] अपने अदम्य उत्साह से दूसरे पुराने आलसियों और इसी [illegible] ऐसा कथा को साथ ले कैसे उत्तम अवस्था को ले गया [illegible] रात में जब उस दण्ड की अवधि पूर्ण हुई और वे लोग [illegible] उसे नर्क से लेने आये तो उन्हें वह नर्क नहीं मिला अर्थात् [illegible] स्वर्ग बन चुका था। इसी प्रकार हमारा इस नरकरूप को [illegible] पुरुषार्थ और विवेक से [illegible] कर सकते हैं

दीख रही है स्वर्ग बना सकते हैं। यह सब कुछ हमारे और बुद्धि पर निर्भर है।

दान वीरों से अपील:—

नत्व कामये राज्यं न सौख्य ना पुनर्भवम्।
कामदे दुःखतप्तानां प्राणीनामार्ति नाशनम्॥

मरु-भूमि में स्वर्ग बसाने की प्रबल कामना से प्रेरित बनाई हुई इस तीन वर्षीय योजना को सफल बनाना देश सपूतों का काम है जो अपनी नेक कमाई की थैलियों का उदारता पूर्वक देशोन्नति के कार्यों के लिये सदैव खोले रहते शिक्षा दानका यह कार्य हम उन इलाकेमें आरंभ कर रहे हैं रेल सडक और सुपरिरचित मार्गों यातायात के समस्त अभाव है। यही क्यों जहाँ १०—१०, १२, १२, मील तक के भी दर्शन नहीं होते। इन्हीं कठिनाइयों, आपत्तियुक्त को दुर्गमता और बस्तियों की निर्जनता एवम अज्ञानता पानी के अभाव से यहाँ के देहात अपने ही प्रांत के से अलग अलग हो रहे हैं। मरु-भूमि के नगरों (शहरों) यहाँ के प्रसिद्ध दानियों की अतुल उदारता से अनेक स्कूल और हाई स्कूल चल रहे हैं। लेकिन इन देहातों में तथा अज्ञानान्धकार छाया हुआ है।

ऊँची शिक्षा तो क्या जहाँ (१ (२) सिखाने का भी प्रबन्ध नहीं है। देहातों की अज्ञानता से जो भारी हानि देश हो रही है वह असाधारण है। यहाँ क्या २ अनर्थ लोगों में घास पैदा होती है। जो प्राय सभी ही उसमें वय नष्ट जाती है। इनलोगों में इतना भी विवेक नहीं अकाल का सामना करने को उसका संग्रह करने और उस म

सिद्ध समाज सुधारक सेठ रामगोपाल जी मोहता बीकानेर निवासी का मरुभूमि निवासियों को सन्देश

[illegible]

की सम्पन्नता रिवाज का नहीं छोड़ते। इस तरह की कुरीतियों करके कर्जदार बनते हैं। फिर लेन देन और हिसाब [illegible] रहने की वजह से चालाक एवं सूदखोर व्यापारियों के करे हुए लिए नये कर्जों की बही में फंसते हुए अपने खून का पसीना पैदा की हुई गाढ़ी कमाई से खुद वंचित रह कर दूसरों को बनाते हैं। खेती और पशु-पालन के नये नये तरीकों से बाकिफ कर इस बीसवीं सदी में जब कि दूसरे देशों के किसान लगातार करते हुए कुदरत की शक्तियों से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा रहे हैं। देश के किसान अब तक खेती करने और पशु पालन के पुराने अविवेक के अटपटी तरीकों को अपनाये बैठे हैं जिनमें उनका अपार मेहनत पड़ता है और लाभ बहुत कम होता है। आपस की फूट और के कारण आपसदारियों के अन्धाधुन्ध से अपना रक्षा नहीं कर सकते मुकदमेबाजी में जो धन बरबाद किया जाता है उसकी सही अन्दाजा लगाना ही मुश्किल है। जब तक ग्रामीण किसान विश्वासी, अशिक्षित, अपने हितों के लिए बेदाग और बराबर के में पड़ रहेंगे तब तक देश के शरीर का सबसे बड़ा भाग कमजोर और पोषण के अभाव में लस्तहाल, चेतनाहीन और मुरझाया हुआ रहेगा। एक अर्से से दुनियां बहुत तेजी से बदल रही है। व्यापारी युद्ध ने इस तब्दीली को तेज कर दिया है और ऐसे जिनके पास धन धर्म आदि के परम्परागत साधन और शक्ति है वह सारा अपने स्वार्थों के लिए सुव्यवस्थित हो कर अपने चेष्टायें कर रहा है परन्तु गांवों की जनता अपने अज्ञान और विश्वासों में पड़ी हुई अपनी रक्षा के लिए कुछ भी कर नहीं रही। अपनी दिशा हुई स्थिति में सुधार के रही है वही हालत में वह अपने अपनी रक्षा के लिए खुद सचेत नहीं [illegible] अधिक बरबादी और विनाश का सामना करना पड़ता।

गांवों के नवयुवकों का एक विशेष समय में सारा यह कर्तव्य

ोर है कि जल्दी से जल्दी होश में आकर संगठित हो जाँय और
वश्यरूप, अशिक्षा एवं पूर्व के खिलाफ जिहाद बोल दें, गावों के
ब्दों और मनगढ़ंत गुत्थियों को सामाजिक कुरीतियों और फिजूल
रिवाजों का नामो निशान मिटाने के लिये प्रतिज्ञा बद्ध होकर गाँव गाँव
प्रचार करने की जरूरत है। हमारी तरफ के गाँवों में रहने वाले
नगर दौरान में कई जातियाँ हैं जैसे—जाट, बिसनोई, राजपूत वगैरह
र इनमें अपनी जाति के कुछ अलग अलग रीति रिवाज भी हैं। मगर
ी बड़ी भयानक और नाशकारी कुरीतियाँ प्रायः सब जातियों में एक
ही पाई जाती हैं और इनके जरिये से होने वाली बरबादी का शिकार
प्रायः सभी गाँवों में रहने वालों को बनना पड़ता है। मरने के बाद
ेवा या मृत भोज करने की कुप्रथा सबमें मौजूद है। बेटी के रुपये या
न लेकर देवने का रिवाज सब गावों में प्रचलित है। शादी के मौकों
अपनी हैसियत से बढ़ चढ़ कर जेवर चढ़ाने की बुराई को सब लोग
ाये हैं। शादी में बड़ी बड़ी बरातें बना कर समधी के यहाँ फौजों
ा का पड़ाव डाल कर उसे गाँवों और घर बरबाद कर देने का पाप
ः सभी बना रहे हैं। धन को पानी की तरह बहाने के लिए जब तक
ह बड़े बड़े गाढ़े सुचे रहेंगे तब तक किसान कैसे अपने को सुधारने
ा सकेंगे? आप लोगों को चाहिये कि इन बुराइयों और समाज के
मों को रोकने के लिये अपने अपने गावों में और अपनी अपनी जातियों
एकत्रित इकट्ठे करके अपनी अपनी जाति के कुछ देवताओं के नाम
कसम खाकर प्रतिज्ञा करलें कि हम आज से इन कुप्रथाओं में हमेशा
लिये कमी करते हैं। इनसे पहले इन प्रथाओं के जरिये हमने अपना
ौर अपने भाईयों का जो नुकसान किया है उसके लिये परवाताप करते
और आइन्दा इन पापों का प्राण रहने कहीं पर भी नहीं पड़ने देंगे।
ीवर जैसी अट प्रथा को न कभी बन्द कर देना चाहिये शादी के
ों के मृत्यु की तादाद कम से कम मुकर्रर कर देना चाहिए जो अमल
ा कर कमजोर से कमजोर हैसियत के भाई के लिए भारी नहीं

पड़ें। इसी तरह बातियों की तादाद और बनावट को कम से कम कर देनी चाहिये। लकड़ी बेच कर रुपये लेना भी बेचकर रुपये लेने के समान दूषित और पापपूर्ण समझ कर रोक देना उचित है।

साक्षरता और हिसाब किताब की शिक्षा के साथ साथ जिस क्षेत्र या इलाके से सहायता प्राप्त करके आधुनिक तरीकों को काम में लाने की चेष्टा करनी चाहिये। कुरीतियों और फिजूलखर्ची से बचाने हुये गाय के लोगों के हित के लिए स्कूल, अस्पताल, कुर्ये तालाब ढोरों (पशुओं) की अस्पताले बनाने में लगाना चाहिये।

अगर इस तरह गाँव वालों का सहयोग में निम्न कार्यों जैसे और कोआपरेटिव स्टोर खोलने का आयोजन करना चाहिये जिससे जरिये से किसान अपना उत्पादन बाहर अथवा महियों में आने संस्थाओं के द्वारा बच सके और बदले में आवश्यक चीजें और इस प्रकार की संस्थाओं का अगर गाँवों में पूरी तौर से संगठन हो तो गाँवों के लोग सूद खोर एवं मुनाफाखोर व्यापारियों और महाजनों की हिंसा दृष्टि लूट और शोषण से बच सकते हैं।

काम काजी में उत्साह और लगन का होना बहुत जरूरी है। हमें आशा करना है कि आप मेरे निर्देशों को ध्यान से समझ कर काम करेंगे। और अपनी शक्ति भर कोशिश करेंगे। इसके लिये आप लोगों में कमेटी-कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है आप ऐसे काम करने वहाँ और यह काम प्रारम्भ करने के लिये कहाँ होनी चाहिये।

आशा है आप कुशल से होंगे।

रामगोपाल मेहरा

मकान किराया	१५)	मासिक
वेतन अध्यापिका	२५)	"
वेतन दाई	१०)	"
अन्यान्य व्यय	१५)	"
कुल	६५)	मासिक

एक स्कूल में ३ वर्ष और ६ वर्ष के बीच के कम से कम ३० बालक भरती किए जा सकते हैं जिनमें २० लड़के अथवा लड़कियाँ जिनसे काम ली जाय तथा दस लड़के निर्धन घरों के, जिनसे फीस ली जाय, शिक्षा पा सकेंगे। बच्चों से प्राप्त शुल्क की सहायता इस प्रकार हो सकती है।

प्रवेश शुल्क	३० बालक
पाठन शुल्क	२० "
अन्य पाठ्य कार्य	३० "
दूध फीस	२० "
	८०

पैंसठ रुपये मासिक व्यय के लिए लगभग ३०) स्कूल के लिए प्राप्त हो सकते हैं। मकान आदि की सहायता प्राप्त हो जाने पर स्कूल और भी बढ़ाया जा सकता है। अध्यापिका के अतिरिक्त अन्य बच्चों को शिक्षा के लिए कक्षा न बढ़ाना ही अच्छा है कठिन न होगा। निर्धन घर के बच्चों के [illegible] के लिए शुल्क देना होगा। यदि इस [illegible] मासिक चन्दा का प्रबन्ध हो जाय तो [illegible] सम्बन्धों को [illegible] सहायक तथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] के शिखर में ३ कोस [illegible] तथा १६० [illegible]
[illegible] की [illegible] में भी [illegible] थी। [illegible]
[illegible] तथा [illegible] महावीर स्वामी के [illegible]
[illegible] के [illegible] और [illegible] के [illegible]
[illegible] थी। [illegible] के [illegible]
[illegible] तथा [illegible] के [illegible] के पास
[illegible] के [illegible] तथा
[illegible] थी। [illegible] में
[illegible] उनके [illegible]

[illegible] के समय में भी [illegible] हालत रही। [illegible]
[illegible] का [illegible] था [illegible] नहीं
[illegible] के कारण उस समय [illegible]
[illegible] में [illegible] था।
[illegible] कि [illegible] बादशाह [illegible] में
[illegible]। [illegible] के [illegible] में [illegible] बादशाह [illegible]
[illegible] है। [illegible] बादशाह के [illegible] को दिया है।
[illegible] के [illegible] का [illegible] में रहित करके
[illegible] के अनुसार [illegible] करो और विरोध कर
[illegible] करो।

[illegible] बादशाह के [illegible] को एक [illegible]
[illegible] कि, "यह [illegible] ईश्वर के बनाये हुये हैं।
[illegible] है [illegible] को [illegible] चाहे
[illegible] है [illegible] कि मनुष्य मव
[illegible] नहीं [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हल चलाने से ही हो सकती है। और हलों का चलाना बैलों पर ही निर्भर है। इससे स्पष्ट हुआ कि सब संसार और मनुष्यों तथा पशुओं के जीवन का आधार यह गौ जाति ही है। इसलिये हमारे साम्राज्य में गौहत्या की रसम बिलकुल न रहे। मोहम्मदशाह और जहांगीर ने भी गौ हत्या बन्द करने के फरमान निकाले। शाह आलम ने १३ जिहजहजा ३१ मोहला को फरमान निकाला कि गाय और बैल बेशुमार फायदा और लाभ रखते हैं, मनुष्य और पशुओं का जीवन अन्न और घास चारे पर निर्भर है और यह दोनों चीजें कृषि के बिना मिल नहीं सकती, खेती गाय व बैल के बिना कठिन है। अब गाय व बैल पर संसार की अन संख्या और मनुष्य का जीवन निर्भर है। इस बात को ध्यान में रख-कर मेरे आधीन साम्राज्य में गौहत्या का रिवाज बिलकुल न हो। और सर्वथा मिटा दिया जावे। इन फरमानों के पालन के सबूत में प्रसिद्ध इतिहासकार सर विलयम हण्टर ने लिखा है कि मुगलराज्य के २०० साल में भारत में गौ वध नहीं हुआ। मि० विन्सैण्ट सिमिथ भारत के प्राचीन इतिहास नामक पुस्तक में लिखते हैं अकबर ने अपने बड़े साम्राज्य में गौ वध करने वालों के लिये प्राणदण्ड की व्यवस्था की थी। पहले के बड़े २ बादशाहों ने ही नहीं १८ वीं सदी में ही मैसूर के नवाब टीपू सुलतान ने बड़ी कोशिश करके वहां की प्रसिद्ध गायों की नसल अमूल्य महत्व का कायम रक्खा तथा उन्नत किया। यह ठीक है कि कुछ मुसलमान बादशाहों के समय गौहत्या होती रही, पर बहुत ही कम। अब की तरह बढ़ती हुई व्यापारिक हत्या न थी, गायों की अधिकता तथा अरज़ाई के कारण मुसलमानों के समय में दूध, घी की अधिकता रही, जिसके सबूत मुसलिम राज्य काल के अन्तिम दिनों में भी १) रुपये का ४५ सेर दूध तथा १) रुपये में १०॥ सेर घी मिलता था। इतिहास तथा हालात से यह सिद्ध होता है कि मुसलमान बादशाहों के समय आज की अपेक्षा गायों की हालत कई गुना अधिक तथा अच्छी थी।

गाय ही क्यों, नामक पुस्तक से उद्धृत

गो पोलन की परम्परा

[ले० श्री ठकुर देश राज जी उप प्रधान भरतपुर राज सभा]

आर्थिक दृष्टि से गौ बड़ा ही उपयोगी जानवर है। अति प्राचीन काल से यह हजारों लाखों प्राणियों के जीवन निर्वाह का एक मात्र साधन रहा है। गूजर, गोप (अहीर) भारत की ऐसी जातियाँ हैं जिनके जीवन निर्वाह का आधार अनेकों वर्षों तक केवल गाय ही रही है। यह इतना उपयोगी और प्रिय जानवर है कि इसे ऋषि राजाओं से लेकर कुटियों में रहने वाले और मवेशानी आदि और मुनि भी पालते थे। महाराज दुर्योधन के नौ हजार गायें थीं। भगवान कृष्ण ने अपने पिता वसुदेव को कंस के कारागार से मुक्त कराने के बाद अपनी जन्म भूमि में गौओं की वृद्धि कराने लिए अपने कुल के सब गौ की एक बार-फ्रेन्स बुलाई थी। आज वह स्थान जहाँ गौओं के चराने के लिये सब रोह हुआ था ब्रज में, गोवर्द्धन तीर्थ, कहलाता है। वशिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र आदि की गायें प्रत्न काल में प्रसिद्ध हैं। हम सुना करते हैं कि धरती माता गाय के सींग पर टिकी हुई है। अलंकार से यह कथन सार है। सारी दुनिया ब्रह्म से होती है और ब्रह्म देता करते हैं की सब ता ब्रह्म देव। यदि बैल न हों तो ब्रह्म पैदा करना मुश्किल हो जाये और सारी दुनिया को अनाज का दर्द देखना पड़े। जैसे हम एक गाय को उसकी जिन्दगी की देन पर विचार करें तो भी वह एक बड़े फायदे की चीज है। उदाहरण के तौर पर हम एक सधन वर्ष की गाय का हिसाब लगाते हैं। रतना एक गाय है जिसने अपनी १२ वर्ष की आयु में ६ बछड़े दूध दिया, उसके दूध की औसत पैदावार तीन सेर रही ६ वर्ष में ऐसी दृष्ट मन उसका दूध हुआ जिसकी कीमत पाँच रुपया मन के हिसाब से आठसौ दूध रुपया हुआ। उसने अपनी जिन्दगी की आयु में छः बछड़े दिये जिनमें तीन बछड़े और तीन बछड़ी। तीन बड़े बैल होने पर आठसौ रुपये के तीन बछड़ी गाय होने पर दोसौ रुपये की। इस प्रकार कुल बारह सौ रुपये

उसमें पैदा हुई। मरु भूमि में जहाँ गायों के चारे पर खर्च करने की नौबत आती है आठवाँ रुपये का चारा लगा लेते हैं—इस प्रकार एक गाय अपना खर्च खाने के बाद एक हजार रुपया हमें देती है, और इसी बीच में चक्र वृद्धि ब्याज की भाँति उसकी बछिया भी गायें हो कर ब्याने लगती है—यह मुनाफा अलग है। इस प्रकार एक गाय अपने स्वामी को औसतन एक सौ रुपया मास का लाभ देती है। अगर किसान पाँच गाये पालता है तो उसकी रोटी कपड़े की जिम्मेवारी गायें अपने ऊपर ले लेती हैं। यह खेती व्यापार तथा दूसरा धन्धा करने से मुनाफे में है।

मरु भूमि गायों के पालन के लिये भारत भर में सबसे अधिक उपयुक्त स्थान है, क्योंकि गौ—पालन में सबसे बड़ी दिक्कत चारागाहों की कमी है, और मरु भूमि में चारागाहों की कमी नहीं, भूमि की काफी अधिकता इस प्रदेश में है। हाँ, इन चारागाहों को इस्तेमाल करने की कला भी सीखनी पड़ेगी। आज कल होता यह है कि—जितना भी जंगल होता है उसमें पशु हर समय चरते रहते हैं। उसका नतीजा यह होता है कि चारा बढ़ने नहीं पाता। होना यह चाहिये कि गायों के चारागाहों को चार भागों में बाँट लिया जाये। चारों २ से पन्द्रह २ दिन का अन्तर देकर उनमें-मवेशी छोड़े जायें। इससे चारे की उत्तमता और वृद्धि कायम रह सकेगी। अकाल का सामना करने में यह रीति बहुत मदद देती है। इस रीति को हम चारे का उचित उपयोग और चारे की मितव्ययिता कहते हैं। तथा मितव्ययिता सदा काम आने वाली और लाभकारी प्रणाली है।

हम यह कह सकते हैं कि—यदि मरु भूमि का देहाती पशु पालन भी ठीक ढंग से जान जाये तो यह निश्चित है कि बिना दूसरा धन्धा किये भी अपना निर्वाह भली भाँति कर सकता है।

सहकार समितियाँ

किसी देश में उद्योग धन्धे और व्यवसाय तब तक फल-भूत नहीं

[illegible] — 'प्रायश्चित्त अनुष्ठान' के अन्तर्गत [illegible] [illegible] [illegible]

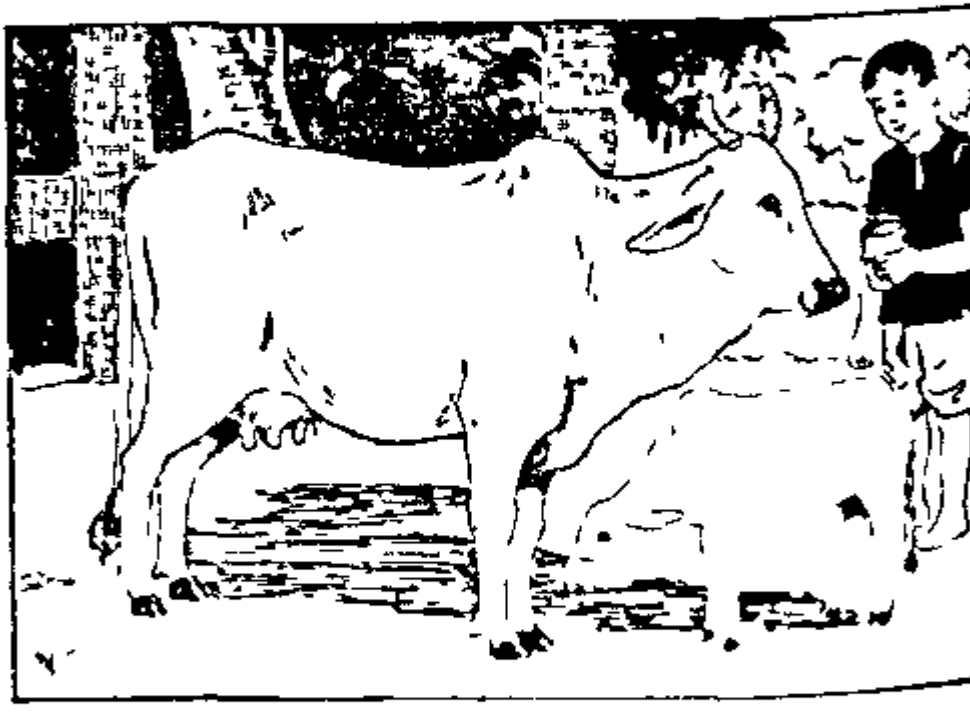

गाय

प्रसिद्ध तथा लाभदायक थीं। सरकारी विशेषज्ञों की वर्णसंकरता तथा देशज पैदा पैदा करने वाली नीति के कारण नष्ट प्रायः होगई। हिसार के सरकारी फार्म से जो भारत ही नहीं एशिया महाद्वीप भर में सबसे बड़ा सांड उत्पन्न करने का स्थान है। हिसार तथा निकट इलाके की गायों की नसल को लाभ नहीं हानि ही पहुँची है। रोहतक जिले के पशुओं की जांच सम्बन्धी सरकारी रिपोर्ट ने भी हिसार फार्म के सांडों की प्रशंसा नहीं बताया। रोहतक के जिन गांवों के अन्दर कुछ अच्छी गायें हैं वहां के लोगों ने खराब होने के कारण हिसार फार्म से सांड लिये ही नहीं। अब वहां के पशु विशेषज्ञ दिल्ली मूल सुधारने के लिये अधिक दूध पैदा करने वाली नसल बनाने का यत्न कर रहे हैं। पर यह सुधार शीघ्र न होगा। पचास-साठ साल में जो गड़बड़ आई यदि ढंग से स्थायी तौर पर काम हुआ तो भी उसे ठीक करने में कई वर्ष लगेंगे।

[illegible]

देने और अच्छे बछड़े बछड़ी समय पर उत्पन्न करने वाली पुराने खरने की गायें हों उन्हें पूरी पूरी जांच करके खरीदा जावे। सांड भी ऐसी ही गायों द्वारा उत्पन्न किया हुआ हो। इन बछड़े बछड़ियों को आवश्यक दूध पिलाया जावे। तथा भविष्य में नस्ल तैयार करने के लिये पूरी देख रेख की जावे। जो लोग बछड़े बछड़ियों को कम दूध पिलाने या उत्पन्न होते ही अप्राकृतिक तरीके पर अलग कर देते हैं, वह यहां के नस्ल सुधार कार्य के लिये ठीक नहीं। धनों से ही आवश्यक दूध मिलने से ही अच्छी नस्ल के सांड से उत्पन्न हुए बछड़े अच्छे सांड तथा बछड़ियां अधिक दूध देने वाली तथा अच्छे सांड पैदा करने वाली गाय होती हैं। यदि बछड़ों को पर्याप्त दूध पिलाया जावे तो पहली नस्ल में अनुमान लगाया, दूसरी में देखा तथा तीसरी में चुनने के करीब हो जाता है।

नस्ल सुधार द्वारा गायों का दूध बढ़ जावे तो गायों की स्थायी उन्नति तो हो होती, दूध डाक्टरों को लाभदायक व्यापार बन जावेगा। अतः अच्छी नस्ल तथा दूध का उपयोग बढ़ाना—इन दोनों दृष्टियों से नस्ल सुधार का यह तरीका लाभदायक होगा। सरकार पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। यह अपने नस्ल सुधार के कार्य की भूलें ठीक करने पर ध्यान देगी। तथा अधिक काम होगा।

इस तरीके पर काम करने से, पहले पांच वर्ष अनुमान से १०० रुपये लगाया प्रति गाय, दूसरे पांच वर्ष अनुमान से २० रुपया प्रति गाय खर्च में कमी होगी। दूसरे वर्ष के अन्त में सरकार तथा जनता में यह नस्ल सुधार का कार्य एक लाभ दायक व्यापार हो जावेगा। नस्ल सुधार कार्य में व्यापारी तथा कृषक कम दिलचस्पी लिया करते हैं। इस तरीके से [illegible]

हो गौशालाएँ ही इसे आरम्भ करें। भारत सरकार को भी, नसल सुधार तथा अधिक दूध उत्पन्न करने वाली गौशालाओं को कुछ सहायता देने की जरूरत है। पर यदि भारत सरकार सहायता न भी दे तो भी गौशालाओं को गोवंश की वास्तविक उन्नति तथा रक्षा का यह काम करना चाहिये। आशा है गौशालाओं के संचालक तथा गोवंश की स्थायी उन्नति के लिये वास्तविक कार्य करने वाले समान नसल सुधार के कार्य को करके स्थायी लाभ उठावेंगे।

हरदेव सहाय,
मन्त्री गोवंशरक्षिणी सभा हिसार।
मासिक "दीपक" से

कैसी गायें खरीदें ?

जो अच्छी नसल के सांड तथा गाय की बेटी हो, जो अधिक तथा अधिक दिनों तक दूध देती हो, जो अच्छे खाने की हो, जो ब्याने से तीन महीने के अन्दर ग्याभिन हो जावे, जो एक महीने से अधिक की ब्याई हुई न हो, जो मारने वाली भी नहीं हो और शान्ति प्रिय हो, जिसके बछड़े अच्छे सांड की औलाद हों, जो दूसरी या तीसरी बार की ब्याई हुई हो, जिसका शरीर रेशम जैसा मुलायम, सुडौल तथा सुन्दर हो, जिसके चारों थन बराबर अलग अलग एक सी हों, जिसका दूध खारी हो, जिसका दूध खट्टा न हो पूरा खसी हो, कान बड़े तथा अन्दर कुछ पीलापन लिये हुए हों, सींग बराबर हों। गाय खरीदने से पहले उसे खिलाने पिलाने की पूरी व्यवस्था की जावे। इस गाय को बछड़ा लाने के लिये तैयार हो। उस गाय के बछड़े को अच्छी तरह देख कर ही [illegible]

...ाद खरीदने समय ये ...ें किसी बात को भी ध्यान किस ...
किसमें गाय खरीदी जाये उसका (१) नाम (२) उसके पिता का नाम
३) जाति (४) गाय (५) गाय खरीदने की तारीख तथा तिथि (६)
...य मूल्य में खरीदी (७) पर की बछड़ी की या किसी दूसरे से गाय
...ी थी मोल ली हुई थी तो पहले मालिक का नाम और पता (८) गाय
...ुछिया (९) रंग, सींग, उमर, पूंछ, जितनी बार ब्याई है (१०) पहिले
...ानों में बछड़े दिये या बछड़ियां। उसका चलन अच्छा होगा है।
११) यह किस जिले या तहसील की ब्याई है?

यह गाय पिछले ब्यानों में कितना तथा कितने दिनों तक दूध देती
...ी, की कितना था? यह बछड़ा किस असल के बीज से पैदा हुआ
...ह गाय की पैदा की हुई बछड़ियां कितना तथा कितने दिनों तक
...देती है? बछड़े कैसे होते हैं? यह गाय पिछले ब्यानों में ब्याने से
...कितने कितने महीनों बाद गर्भवान होती रही है? पिछले ब्यानों में
...व कितना दूध दिया जाता रहा? इस गाय की मां कितना तथा
...ने दिन तक दूध देती रही? मालूम हो सके तो इसकी नानी के
...न्ध में भी यह सारी जानकारी दें।

यह गाय किस असल के बीज से पैदा हुई। इस बीज की बछड़
...ियां कितना तथा कितने दिन दूध देती है। इस गाय के ब्याने का
...बातों की जानकारी जो पूरा देख दो सब अच्छी तरह सब सच लिखें।

हरदेव सहाय
मन्त्री गोसेवक पिंडारी सभा हिसार

मिट्टी की करामात

...बैल के ...ह ...ह का बड़ा ...ान है। इस की मिट्टी
...ह ...ह को मजबूत बनाने में ...ती है और ...

का प्रभाव दूर हो जाता है। जले हुए स्थान पर मिट्टी का लेप बड़ा आराम पहुँचाता है।

कैसी ही चोट हो, मांस निकल आया हो, यहां तक कि हड्डी दिखाई देती हो तो उस चोट पर भी मिट्टी आराम पहुँचाती है और घाव को धीरे धीरे इस तरह भर देती है कि अच्छा हो जाने पर उसका चिन्ह भी नहीं रहता।

तीव्र ज्वरों में पेड़ू में मिट्टी का पलस्तर ज्वर के वेग को कम करने में बड़ा सहायक होता है। कब्ज़ा तथा आंव का मिट्टी की पट्टी द्वारा आराम पहुँचाती है। सब रोग में पेड़ू और छाती पर मिट्टी का लेप करने से बड़ी सेहत मिलती है।

जिन्हें सिर दर्द की शिकायत बनी रहती हो वे यदि दर्द के समय माथे और पेड़ू पर मिट्टी का प्रयोग करके देखें, उन्हें मिट्टी का अपूर्व गुण देख कर चकित हो जाना पड़ेगा। कैसा ही कठिन सिर दर्द क्यों न हो मिट्टी के उपचार से अवश्य शान्त हो जावेगा।

आंखों के दर्द में मिट्टी ऐसी शीतल और गुण दायक सिद्ध होती है कि उसका उपचार कर लेने पर आंखों में डालने वाली दवाई को इस्तेमाल करने का कभी जी नहीं चाहता। इसके सिवाय मिट्टी मुखदूषिका, दाद खुजली आदि चर्म रोगों के लिये भी अचूक औषध है।

साप्ताहिक 'विश्वमित्र' से

१०—मादक वस्तुओं का भूल कर भी सेवन न कीजिये। चाय, काफी, कोको, तम्बाकू, शराब आदि किसी भी वस्तु को आदत न डालिये।

सौर रोगनाशक
ज्ञानमण्डल काशी से

घरेलू नुसखे

(१) अजीर्ण—(१) थोड़ा नमक ठंडे पानी में मिलाकर पिओ। (२) गाय के दही में बराबर का पानी मिला कर थोड़ा सेंधा नमक, भुना जीरा, पीसी काली मिर्च डाल कर पिओ। इसे पीने से अजीर्ण दूर होगा। (३) सोंठ, पीपर, चिरायता और सेंधा नमक गरम पानी के साथ खाओ। (४) नींबू के रस में केशर घोंट कर चाटो।

(२) अतिसार—(१) जायफल पीसकर नाभी पर लेप करो (२) रक्तातिसार हो तो शतावर पीस कर दूध के साथ या घी में भून कर खाओ। (३) रक्तातिसार में कुरैया की जड़ आधा तोला पीस कर मट्ठे के साथ खाओ। (४) आमातिसार में जायफल, लौंग, जीरा और सुहागे के लावा का चूर्ण शहद के साथ चाटो।

(३) अधकपारी—(१) सूर्योदय से पहले ३ या ४ दिन गाय का दही और मक्खन खाओ। मिश्री भी मिला सकते हो, अथवा ताजी अजवायन खाओ और उसका शीरा पिओ अथवा रात भर ओस में रखा हुआ जल पिओ। (२) केले के पत्ते की धी में पीसकर सूंघो।

(४) आंख आनेपर—(१) आधी छटांक गुलाबजल में दो रत्ती फिटकरी पीस कर खूब मिला दो इसकी दो तीन बूंदें आंख में डालो। (२) शुद्ध शहद आंख में डालो (३) साफ कपड़े को कई तह करके गाय के कच्चे दूध में तर कर लो फिर प्रत्येक तह पर जरा सी फिटकरी बुरक दो और कपड़े को आंखों पर रक्खो। अंजन व लालो दूर होगी।

१—घर की हवा शुद्ध रखने का विशेष ध्यान रखना चाहि
हवन सामग्री, शुद्ध कपूरी, चन्दन चूरा, नागरमोथा, धूपसरीला,
इलायची, गूगल, घिरायता, नीम के पत्ते, निर्गोंद, लाल चन्दन
धूनी में वायु शुद्ध हो जाती है। हवन में हवन पूरा करो, अधवा गन्ध
लोबान या गूगल को रोजना या एक दिन के अन्तर से जलाते
रहना चाहिये।

२—घास, जनी और रेतनी कपड़ों की विशेष सावधानी रखनी
चाहिए। बरसात के बाद उन्हें अच्छी तरह साफ कर हिफाजत से रख
देना चाहिये। कपूर, नेफथलीन, चन्दन का बुरादा, कीड़ा को खड़ें,
पिसी हुई कोलतिकरो का चूरा, देवदारु की पत्ती, कड़वी निंबौ का
चूर्ण, नीम की पत्ती आदि तीव्र गन्ध के पदार्थों में कीड़े नहीं लगते।
पहले कपड़े को छोटी पेटियों में इनमें से कोई चीज भर देनी चाहिए।
और कपड़ों की तहों में दबा देना चाहिये। कालमिर्चो और
नूनों में मोटा और बाहर नमकड़ का बड़ा बना कर चूर्ण पत्ते देने से
कपड़ा बच जाता है। कपड़े का कोई भी कीड़े मारने की अच्छी
है। इसके प्रभाव कपड़ों को समय समय पर धूप और हवा
में दिखलाते रहना चाहिये।

३—कपड़े पर कोई के पड़े लग गये हों तो नींबू के रस में नमक
मिला कर मलना चाहिये। चाय कपड़े के दाग मुलाने के पानी में, चूने
का दाग गरम सिरके से, कालिख कपड़ों में लगे घास के दाग केरोसिन
तेल और बेंजीन पेट्रोल में अच्छी तरह साफ कर २० मिनट बाद
साफ पानी में धोकर सुखाने से [illegible] के दाग अमोनिया और नार-
[illegible]

सूखा नमक मलने से, कम्बल पर के तेल के दाग दही से उनी कपड़ों के दाग गरम पानी में नींबू का अर्क डाल कर रगड़ने और धूप में सुखाने से साफ हो जाते हैं।

५—पुस्तकों और कागज पत्रों को सूखी, गरम और हवादार जगह में रखना चाहिए। आलमारी में से पुस्तकें निकाल कर समय समय पर झाड़ते रहना चाहिये कीड़ों से बचाव के लिये पुस्तकों पर फिटकरी और सफेद मिर्च की बुकनी बुरक देनी चाहिए। आलमारियों में कीड़े लग गये हों तो लाख की बार्निश करा देनी चाहिए।

६—खाने पीने के बर्तनों की सफाई की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। चांदी के बर्तन गरम पानी में धोकर सुखा लेना चाहिये। फिर साफ चूने का लेप कर दें। जब सूख जाय तो फलालैन के कपड़े से पोंछ डालें। नक्काशी हो तो कूची से साफ करना चाहिए। आलू के पानी में डालने से भी चांदी के बर्तन साफ हो जाते हैं। फूल के बर्तन गीली राख से मांज कर पोंछ देने चाहिएँ। पीतल के बर्तन बालू और राख से साफ हो जाते हैं। यदि धब्बे पड़ गये हों तो नींबू के छिलकों को नमक के साथ मलना चाहिए। ताबे के बर्तन भी इसी प्रकार साफ करते रहना चाहिए। भीतर बहुत मैल जम गई हो तो आध सेर पानी में एक चम्मच वाशिंग सोडा डाल कर उबाल देना चाहिए। सिरके में थोड़ा वाशिंग सोडा या चूना मिला कर जस्ते के बर्तन साफ करने चाहिए। लोहे के बर्तन राख और बालू से साफ हो सकते हैं। जंग से बचाने के लिए उन पर चूना पोत रखना चाहिए। आइनों आदि की चिकनाहट लौजते पानी में सोडा डाल कर झाग से साफ होती है। आलमोनियम के बर्तन नींबू के रस में भिगो कर कपड़े के टुकड़े से मल कर गरम पानी से धो डालने चाहिएँ। खड़िया और मुलतानी के पानी में घोल कर कपड़े से पत्थर के बर्तनों पर रगड़ना चाहिए फिर पानी में धोकर और कपड़े से बर्तनों को पोंछ देने चाहिए।

८—गाड़ी में यदि सामान छूट जाये तो अगले स्टेशन के स्टेशन मास्टर को तार देना चाहिए। लावारसी सामान स्टेशन पर दो दिन रखा जाने पर उसके बाद बड़े स्टेशन पर भेज दिया जाता है। और वहां से नीलाम कर दिया जाता है।

९—बालक या गुरुष का महसूल भेजने वाला चाहे तो पहले भी दे सकता है और पीछे भी। अकेले बिगड़ने वाली चीजों का महसूल पहले ही ले लिया जाता है। माल की चिट्ठी दिखाने पर माल मिलता है। उसके खो जाने पर ।।।) के स्टाम्प पर इकरारनामा लिखना होता है।

माप तौल की सूची

कपड़े का माप

८ जौ या तीन इंच का १ अंगुल
४ अंगुल या २। इंच का १ गिरह
८ गिरह या १८ इंच का १ हाथ
२ हाथ या ३६ इंच का एक गज
१२ इंच का एक फुट
१॥ फुट या १२ इंच का १ हाथ
३ फुट या ३६ इंच का १ गज

वजन

१ रत्ती भर का १ लोंगा
४ लोंगे का १ छटांक
२ छटांक का १० तोले का १ पाव
२० तोले का एक पाव
२ पाव का आधा सेर
४ पाव या १ आधा सेर का १ सेर

(८ तोला)

१ सेर की १ पसेरी
८ पसेरी का १५ मन
२५ तोले का ५१ सेर (मुद्राकी)
३१ तोले का १ रतल (बर्मा)

अँगरेजी सिक्का

४ फार्दिंग की १ पेनी [~]।
१२ पेनी का एक शिलिंग [~]
२० शिलिंग १ पाउंड [~]

विदेशी सिक्का

अमेरिका —१ डालर = १०० सेंट,
१ शिलिंग = ~ डालर।
जापान —१ येन = १०० सेन =
(।।) रुपया
आस्ट्रिया —१ गुल्डन = १०० क्रेजर =
~ रुपया।

८—गाड़ी में यदि सामान छूट जावे तो अगले स्टेशन के स्टेशन मास्टर को तार देना चाहिए। लावारसी सामान स्टेशन पर दो दिन रखा जाने पर उसके बाद बड़े स्टेशन पर भेज दिया जाता है। और वहाँ से नीलाम कर दिया जाता है।

९—पार्सल या गुडस का महसूल भेजने वाला चाहे तो वहाँ भी दे सकता है और पीछे भी। अगड़ी बिगड़ने वाली चीजों का महसूल वहाँ ही ले लिया जाता है। माल की बिल्टी दिखाने पर माल मिलता है। बगैर सवा आने पर (III) के रसीद पर हस्ताक्षर किये जाते हैं।

माप तौल की सूची

कपड़े का माप

८ जौ या तीन इंच का १ अंगुल
४ अंगुल का २ इंच का १ बित्ता
८ बित्ता का १८ इंच का १ हाथ
० इंच का ३६ इंच का एक गज
१० इंच का एक कुर
१२ कुर का १० इंच का १ हाथ
१ कुर का ३६ इंच का १ गज

वजन

१ [illegible]
० [illegible]
० [illegible]
[illegible]

१ सेर की १ पंसेरी
८ पंसेरी का १५ मन
२८ तोले का ५१ सेर (अठपौ)
३६ तोले का १ सेर (बाढ़ी)

अँगरेजी सिक्का

४ फार्दिंग की १ पेनी [d]
१२ पेनी का एक शिलिंग [s]
२० शिलिंग १ पाउंड [£]

विदेशी सिक्का

[illegible]
[illegible]
[illegible]

इटली:—१ लिरा = १०० सेंटेसिम = ८)। रुपैया।

जर्मनी:—१ मार्क = १०० पेनिस = १)॥ रुपैया।

अँग्रेजी वजन

१६ ड्राम का १ औंस
१६ औंस का १ पौंड
२८ पौंड का १ क्वार्टर
४ क्वा० या ११२ पौंड का १ हंडरेट (Cwt)
२० हंडरेट (हंडर) का १ टन = २२४० पौंड = मन २०।८२॥

क्युबिक इंच (Cu. in.) यानी = २१२॥ ग्रेन

अँग्रेजी और देशी वजन

१८० ग्रेन = १ तोला प्रायः २॥) तोले का १ औंस २१ तोले का १ पौंड
सेर १२॥=)॥ का एक क्वार्टर
मन १।८४॥—॥ का १ हंडर = २ पौंड का १।८ मन

रास्ते का अँग्रेजी माप

१ पैसा = १ इंच
१२ इंच का १ फुट
३ फुट का एक गज
२२० गज का एक फर्लांग
१७६० गज का १ मील

रास्ते का देशी माप

४ अंगुल की १ मुट्ठि
६ मुट्ठि का एक हाथ
४ हाथ का एक धनु
२००० धनु का १ कोस

बीघा

युक्त प्रान्त:—१ बीघा = २०२५ वर्ग गज
बङ्गाल:—१ बीघा = १६०० गज
बम्बैया:—१ बीघा = ३६३० ,,
मद्रासी:—१ बीघा = ६४०० ,,
पञ्जाबी—१ बीघा = १६२० ,,

जमीन का माप

१ हाथ लम्बा × १ हाथ चौड़ा = १ वर्ग फुट
१६ छटाक या ७२० वर्ग फुट का १ कट्टा।
२० कट्ठा या १४४० वर्ग फुट का १ बीघा (बङ्गाली)
३ बीघा का १ एकड़ = (४८४० वर्ग गज)
६४० एकड़ का १ वर्ग मील

समय

६० अनुपल का विपल
६० विपल का १ पल
६० सेकण्ड का एक [illegible]

६० पल या २४ मिनट की १ घड़ी
२॥ घड़ी का १ घण्टा
४॥ घड़ी या २ घंटे का १ पहर
८ पहर या २४ घन्टे का १ दिन रात
७ दिन का १ सप्ताह
२ सप्ताह का १ पक्ष
२ पक्ष का १ महीना
१२ महीने का एक वर्ष
१२ वर्ष का एक युग
१०० वर्ष की एक शताब्दी

डायरी गणन

२० प्रत का १ रूढ़ पक्ष
३ रूढ़ पक्ष का १ दान
८ दान का १ अंश
१२ अंश का १ पींड
६८० प्रेत = १ अंश
३४०० ,, = १ अंश
१७००० ,, = १ कांड
४४१०० ,, = १ दंड
२२०००० ,, = १ दंड

दूध दुहने का गणन

६० दूध के [illegible]
[illegible]

२० ऊँस का एक पिंड
२० पिंड का एक बघार
४ बघार का १ सेवन
१ सेवन = १० पींड = ऽ०० तोला
सेर करीब

सेवक गणन

४ आन की १ रुपी
८ रुपी का १ मासा
१२ मासे का १ तोला

कागज का माप इंचों में

पुस्तकाकार—१३॥ × १९ इंच
डबल ,,—१९ × २३
क्राउन—१५ २०
डबल —२० ४०
डिमाई—२२ ३१
सुपिरियल—१८ २२
डबल —२० × ४६
डबल ,—२१ ४०
सुपर ,—२२ ४४
इण्डिया डबल—२३ ४१

सूत का मान

[illegible]

सेवा के लिये प्रेरित करने वाले आंकड़े

शिक्षा

नाम देश	प्रतिशत शिक्षित	प्रति विद्यार्थी पीछे खर्च
डेन मार्क	१००	१७)
अमेरिका	९५	१६०)
इङ्गलैंड	९७	४८)
जापान	९८	६)
भारतवर्ष	८	८)

वार्षिक आय

नाम देश	प्रति व्यक्ति
अमेरिका	१०८०)
आस्ट्रेलिया	८१०)
ब्रिटेन	६२६)
फ्रांस	४२०)
भारत	४२)

भूमि की उपज

नाम देश	प्रति एकड़
आस्ट्रेलिया	११२ मन गेहूँ
अमेरिका	८७ ,,
जापान	४६ ,,
रूस	३१ ,,
भारत	१८ ,,

गायों का दूध

नाम देश	प्रति वर्ग मील प्रति दिन
भारतवर्ष	१ मन ३ सेर
हालैंड	२७ ,, १८ ,,
डेनमार्क	२२ ,, १६ ,,

दुर्व्यसनों पर खर्च

सम्बाकू—(१६६१०००) प्रति वर्ष विदेश से

भाग—

गांजा—

शराब—(२६६१०००) प्रति वर्ष विदेश से

चाय—

औसत खुराक

नाम देश	प्रति व्यक्ति	दूध
कनेडा	,,	१८ छटांक
न्यूजीलैंड	,,	२०॥ ,,
स्विट्जरलैंड	,,	२३॥ ,,
आस्ट्रेलिया	,,	११ ,,
इङ्गलैंड	,,	१० ,,
अमेरिका	,,	१७ ,,
भारत	,,	२ ,,

सब सज्जन के हाथ के ये आंकड़े प्रत्येक देश प्रेमी के हृदय में सेवा आवश्यक पैदा किये बगैर रह नहीं सकते। हम जिन्हें जो और अधिक मरुभूमि का दूध बढ़ाने के लिये कर सकते हों तो कर [illegible]

और जब हम मरु-भूमि की दशा का अवलोकन करते हैं तो यह इलाका तो शेष भारत से भी बहुत पीछे है और गिरा हुआ है। इसलिये इसके उत्थान की ओर विशेष प्रयत्न किया जाना और ध्यान देना जरूरी है। इसी आधार पर हम प्रत्येक सहृदय देश वासी से हमारी योजना के स्वागत और सहायता की भरपूर कामना करते हैं।

भारत की जन गणना १९४१

भारत (कुल)		३८८१,१७,६२१
	नगरों में	४,११,११,०२३
	देहातों में	३३ ३३,०१,३०२
	पुरुष	१०.१०,२१,७२६
	स्त्री	१८,७१ ७२,२३१
देशी रियासतें		१.११,८१,२३३
विभिन्न प्रान्त (कुल)		२१,१८,०८,०१२
मद्रास प्रान्त		४,११,४१ ८१०
बम्बई प्रान्त		६,०१,०६,२१२
युक्त प्रान्त		२,२०,३०,६१०
पंजाब प्रान्त		२,८४,१८,८११
बिहार प्रान्त		३,११,१०,१२१
मध्यप्रान्त और बरार		१,६८११ २८४
आसाम प्रान्त		१० १०,४ ४११
[illegible]		३० १८,०३०
[illegible]		८०,३८,१११
[illegible]		३०,८१,६८३०
[illegible]		३१,३१,००८

अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त	१,८३ ११३
अण्डमान नीकोबार	३३,७०८
बिलोचिस्तान	८,०१,१३१
दुर्ग प्रान्त	१,६८,७११
दिल्ली प्रान्त	६,१७,१३७
पन्थपिपलोदा	८,३१७

जातियाँ

हिन्दू	२२,४१,३० २०१
दलित वर्ग	४,८८,१६,१८७
मुसलमान	३,२०,२८,०१६
ईसाई	६३,१६,२४६
सिक्ख	२६,११,४४७
जैन	१४,४६,१८१
पारसी	१,१४,८६७
बौद्ध	२,३३,००३
जरायम पेसा	२,२४,४१,८६
अन्य	४०६,८७७
युक्तप्रान्त	८,८०,१०,६१७
हिन्दू पुरुष	२४०००८१६
स्त्रिया	२,१८,०३,७७०
मुसलमान पुरुष	४४,२६,२४२
स्त्रिया	३६,८६,०६०
जरायम पेशा पुरुष	१,४६,४८८
स्त्रिया	१३१,६१४
अन्य पुरुष	२,०६,६०६
स्त्रिया	१६२१८१

आगरा प्रान्त	४,०६,०६,१४७
मेरठ डिवीजन	५७,१६,४५१
आगरा डिवीजन	५३,२६,७६८
रुहेलखण्ड डिवीजन	६१,६५,६६६
इलाहाबाद डिवीजन	६०,१४,८१३
झांसी डिवीजन	२५,५३,४६२
कमायूं डिवीजन	१५ ८१,२६२
बनारस डिवीजन	५५,४५,२५७
गोरखपुर डिवीजन	७६,७२,१०८
अवध प्रान्त	१४१,१४४७०
लखनऊ डिवीजन	६५,३०,६३७
फैजाबाद डिवीजन	७५,८३,२३२
बनारस डिवीजन	५५,४५,२५७
बनारस	१२,१८,६२६
मिर्जापुर	८६,६२६
जौनपुर	१३,८७,४२६
गाजीपुर	६,८५,१८०
बलिया	१० ५३,८८०
गोरखपुर डिवीजन	७०,७२,१०८
गोरखपुर	३६,६३,२७४
बस्ती	२१,८५,६४१
अजमगढ़	१,८२२,८६३
बनारस राज्य	५५

लाख नगर

कलकत्ता	
बम्बई	

पुकारा जाता है) बनवाया था और साथ ही नवीन भवनों के निर्माणार्थ ४५००) दिये थे। आप ही के प्रारंभिक दान से आर्यसमाज श्रीगंगा नगर का हाल बन रहा है। इसी प्रकार आर्य कुमार आश्रम (जिसे जाट छात्रावास के नाम से पुकारा जाता है) जो अपने सम्बन्धी परशराम जी यूनिया के साथ २०००) का दान दिया है। आप का वंश प्रारम्भ से ही समाज सुधार और आर्यसमाज का कट्टर पक्षपाती एवं प्रेमी रहा है।

आप की भूमि (सम्पत्ति— जायदाद) उड़ांग और चक्क नत्थू टाका (टाका वाली काट रियासत भावलपुर) तथा रूप-नगर जिला फिरोजपुर में है।

आप अपने गाव के साथ साथ गंगानगर राज्य श्री बीकानेर में रिपुदमन निवास नामक भवन मे वर्तमान समय में रहते हैं।

जिस प्रकार उक्त विद्यालय से आप का सम्बन्ध प्रारंभ से ही चला आ रहा है, और समय समय पर आवश्यकतानुसार आप का और आप के वंशजों का दान भी चला आ रहा है ठीक उसी प्रकार मरुभूमि शिक्षा प्रसार कार्य की योजना को स्पष्ट और सरल बनाने वाली इस मरुभूमि सेवा कार्य" नाम की पुस्तक को छपवाने मे जो आर्थिक सहायता आप ने दी है। यह आप के सात्विक दान का प्रखर परिचय है। जहा यह दान इस कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक होगा वहीं पर मरुभूमि निवासियों के दिल मे आप के प्रति अमर भावना को पैदा करेगा। यह सुनिश्चित है।

केशवानन्द—जन्माष्टमी २००२

———

पृथ्वी

पृथ्वी गोल है। पृथ्वी का व्यास- विषुवत रेखा पर ७९२६॥ मील है। और ध्रुवों पर ७९०० मील है। पृथ्वी का कुल क्षेत्र-फल १९७५२०,००० वर्ग मील है। जिसमें ५,७०,००,००० वर्ग मील है। और १४,८५२०,००० वर्ग मील समुद्र है। पृथ्वी के थल भाग के ३ हिस्से में एशिया महाद्वीप है। और १ २४ भाग में योरप।

उम्र:—वैज्ञानिकों ने खोज करके बतलाया है कि १ हजार ओन्स यूरेनियम धातु में १० करोड़ वर्ष में १० ओन्स यूरेनियम सीसा बन जाता है। पुरानी चट्टानों में जो यूरेनियम और उनसे बना सीसा मिलते है। दोनों की मात्रा तोल से वैज्ञानिकों ने मालूम किया है कि पृथ्वी को बने हुये एक अरब ४० करोड़ वर्ष हो चुके है।

वजन:—पृथ्वी का वजन ६० क्वाड्रिलियन टन है। तथा यह सूर्य से ९ करोड़ २७ लाख मील दूर है।

चाल:—पृथ्वी की चाल सबसे अधिक वेग चलने वाली एम्पायर से भी १०० सौ गुना अधिक है। साल भर में वह सूर्य के इर्द-गिर्द ६० करोड़ का चक्कर लगाती है।

सौर-मण्डल

सूर्य पृथ्वी से ९ करोड़ २९ लाख मील दूर है और वह पृथ्वी से ३ लाख ३३ हजार ४ सौ ३० गुना बड़ा है। १०० मील प्रति घंटा चलने वाला हवाई जहाज पृथ्वी से चले तो १०५ वर्ष सूर्य तक पहुँचे

चन्द्रमा पृथ्वी से २ लाख ३९ हजार मील दूर है। पृथ्वी के चारों ओर २२॥ मील प्रति सेकेण्ड की रफ्तार से चलती है।

भारतीय व्यवस्थापक सभा (केन्द्रिय-असेम्बली) के मेम्बरों की संख्या १४३ है। इसमें ४० तो नामजद और बाकी चुने जाते हैं। इस सभा की आयु ३ वर्ष होती है और इसके वोटरों की संख्या सन् १९३० के निर्वाचन में १०१२,१७२ थी।

हाथ की कताई बुनाई

सारे हिन्दुस्तान में कुल ५ अरब गज कपड़े की सालाना खपत है। इसमें से २५ फीसदी अर्थात १ अरब २५ करोड़ गज चर्खे से काते सूत का हाथ की खड्डिया तैयार करती हैं. ३५ फीसदी विदेश से आता है और शेष ४० फीसदी हिन्दुस्तानी मिलें तैयार करती हैं। हाथ से तैयार होने वाले कपड़े से कम कम २० लाख जुलाहा और कई लाख कत्तिनों को भोजन वस्त्र मिलता है, जबकि हिन्दुस्तानी मिलें केवल २ लाख ७० हजार ही मजदूरों का काम देती हैं। अकेला अ० भा० चर्खासंघ प्रतिवर्ष ३५ लाख का खादी तैयार करता है और ७॥ लाख कत्तिनों व १० हजार जुलाहों को काम देकर ६ लाख रुपया कताई में व ५॥ लाख रुपया बुनाई में प्रति वर्ष देता है। यदि सब कपड़ा चर्खे व हाथ की खड्डी से तैयार होने लगे तो कई करोड़ भारत-वासियों को रोजगार मिल जावे जिससे वे भरपेट भोजन व वस्त्र पाने लगें।

चर्खे—एक गैर सरकारी सज्जन ने हिसाब लगाया है कि भारत में लगभग ६० लाख हाथ से चलने वाले चर्खे हैं।

जेम्स टेलर अँग्रेज कहता है कि जहाँगीर के राज्य में ढाका के मजदूर १५ गज लम्बा एक गज चौड़ा कपड़ा इतना महीन बनाते थे कि जिसका वजन (९ सौ ग्रेन = १ टोला) चार तोला (४००) होती थी। लेकिन आज कल के बड़े से बड़े कारखानों में इस अर्ज का अच्छे से अच्छा कपड़ा ९० सौ ग्रेन वाले वजन व (१२५) से अधिक मूल्य का नहीं होता।

हरिपुरा गुजरात में हुई कांग्रेस प्रदर्शिनी में एक ऐसा शाल आया था जो अंगूठी में से निकल सकता है।

खादी—खादी पहनना भारत के गांव में रहने वाली अति दरिद्र, भूखी स्त्रियों के पेट में अन्न पहुँचाना है। कारण उनके जीवन का एक मात्र सहारा खादी है। खादी प्रत्येक धर्म प्राण व्यक्ति के लिये अत्यन्त शुद्ध और पवित्र वस्त्र है, क्योंकि प्रायः सभी प्रकार के बने हुये मिलों में के वस्त्रों में चर्बी लगती है।

धर्म-रक्षा और देश-सेवा तथा लोक सेवा की दृष्टि से भारतवासी मात्र का यह एकान्त कर्त्तव्य है कि खादी के अतिरिक्त वे अन्य किसी वस्त्र का उपयोग न करें।

'दीपक' डायरी से